



**स्वच्छता
ही सेवा**


**नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
इलाहाबाद - 211012 (उ.प्र.) भारत
CIVIL AVIATION TRAINING COLLEGE
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
ALLAHABAD - 211012 (U.P.) INDIA**



एक कदम स्वच्छता की ओर

**एक कदम
प्लास्टिक
मुक्त
भारत
की ओर**

23.09.2019 से 27.10.2019





विषय सूची

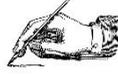
क्र. सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रधानाचार्य जी का संदेश	01
2.	महाप्रबंधक (संचार) का संदेश	02
3.	महाप्रबंधक (एटीएम) का संदेश	03
4.	स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम	04
5.	सीएटीसी में सम्पन्न हुए कार्यक्रम का विवरण	05
6.	स्वच्छता शपथ	06
7.	वृक्षारोपण कार्यक्रम	07
8.	जागरूकता कार्यक्रम	08
9.	बस स्टेशन पर स्वच्छता श्रमदान	09-10
10.	छिवकी रेलवे स्टेशन पर महाश्रमदान	11-13
11.	स्वच्छ सीएटीसी ऑफिस	14
12.	प्लास्टिक रि-यूज़ क्राफ्ट प्रदर्शनी	15
13.	जागरूकता रैली	16-17
14.	सेमिनार कार्यक्रम	18-19
15.	नाट्य प्रस्तुति	20
16.	कर्मचारियों एवं परिजनों द्वारा लेखन, कविता एवं पोस्टर	21-34
17.	पुरस्कार विजेताओं के आलेख	35-46
18.	पोस्टर	47-49
19.	मीडिया कवरेज	50-52
20.	विजेताओं की सूची	53-54

एक कदम स्वच्छता की ओर





प्रधानाचार्य की कलम से.....



02 अक्टूबर 2014 को देश में 'स्वच्छता' को लेकर जो अभियान भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने प्रारम्भ किया था उसमें अब नित नए आयाम जुड़ते जा रहे हैं। वर्ष 2019 के 'स्वच्छता ही सेवा- 2019' कार्यक्रम के अंतर्गत अब भारत सरकार द्वारा प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों पर ध्यान आकर्षित करते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग बंद करने और प्लास्टिक कचरे के प्रभावी प्रबंधन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले बहुत सारे कारकों में प्लास्टिक भी शामिल है। तेज गति से जारी शहरीकरण और औद्योगिक विकास से देश में प्लास्टिक के प्रयोग में वृद्धि हुई है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रति दिन 26 हजार टन प्लास्टिक का कचरा उत्पन्न होता है और हम इस सम्पूर्ण कचरे को रि-साइकिल करके पुनः उपयोग में नहीं ला पाते। प्लास्टिक कचरे का बढ़ता हुआ ढेर मानव जीवन के लिए बड़े संकट का सूचक है। वैज्ञानिकों का दावा है कि प्लास्टिक को पूरी तरह से नष्ट होने में हजारों साल लगते हैं। इनको जलाने से एक तरफ जहाँ जहरीली गैस निकलती है वहीं मिट्टी में दबाने पर यह मिट्टी की उर्वरा शक्ति को नष्ट कर देता है तथा पशु-पक्षियों के पेट में जाने से उनके लिए जानलेवा साबित होता है। इस प्रकार आज प्लास्टिक कचरे का प्रभावी ढंग से निस्तारण करना न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है।

प्रसन्नता का विषय है कि नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज द्वारा "एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर" विषय पर विस्तृत कार्यक्रम का आयोजन किया गया और कार्मिकों ने इन कार्यक्रमों में पूरे उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया और इस दौरान सिंगल यूज प्लास्टिक के कचरे के संग्रहण एवं निपटान के लिए सिविल लाइंस बस स्टैंड, छिवकी रेलवे स्टेशन एवं सी.ए.टी.सी. के आस-पास के क्षेत्रों में किए गए श्रमदान एवं विभिन्न तरीकों जैसे कि निबंध, भाषण, पोस्टर प्रतियोगिताओ, बेकार पड़ी प्लास्टिक की वस्तुओं से नवनिर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी व संगोष्ठियों आदि माध्यमों से चलाए गए जागरूकता अभियान में सक्रिय भागीदारी करते हुए इस सम्पूर्ण आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके लिए सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं। इस सम्पूर्ण आयोजन को ई. पत्रिका के माध्यम से एक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस आयोजन के मुख्य उद्देश्य को सभी कार्मिक अपने जीवन में अपनाएंगे और कार्यालय से लेकर घर तक सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग बंद करने के लिए स्वयं भी पहल करेंगे तथा दूसरों को भी जागरूक और प्रोत्साहित करेंगे। "एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर" अभियान को सफल बनाने की दिशा में उठाया गया हम सबका यह एक कदम देश के लिए अत्यंत लाभदायक साबित होगा।

(अतुल दीक्षित)

कार्यपालक निदेशक/प्रधानाचार्य





संदेश

भारत सरकार ने स्वच्छता पर एक देशव्यापी जागरूकता अभियान “स्वच्छता ही सेवा-2019” की शुरुआत की है और इसके अंतर्गत सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग रोकने एवं प्लास्टिक के कचरे का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने पर जोर दिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत भारत को प्लास्टिक कचरे से मुक्त बनाना है ताकि प्लास्टिक से होने वाले पर्यावरण के प्रदूषण को रोका जा सके। “स्वच्छता ही सेवा-2019” अभियान के शुरुआत के दिन अपने संबोधन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन के लिए कार्रवाई करने एवं अपने घरों, कार्यालयों और कार्य स्थलों को सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग से मुक्त करने का आह्वान किया था। उन्होंने पर्यावरण, पशुओं और जल जीवों के स्वास्थ्य पर प्लास्टिक के खतरनाक प्रभावों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए यह अपील की थी कि खरीदारी के लिए बाहर जाते समय कपड़े अथवा जूट के बैगों का प्रयोग करें तथा कार्यालय में पानी पीने के लिए धातु अथवा मिट्टी की गिलासों का उपयोग करें। उन्होंने लोगों से यह अपील भी की थी कि वे अपने आस-पास से प्लास्टिक के सभी कचरों को एक निर्धारित स्थान पर एकत्र करें और स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के दौरान स्थानीय प्रशासन की सहायता से इसका सुरक्षित निपटारा सुनिश्चित करें।

भारत सरकार के इस अभियान में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण पूरी तरह से सक्रिय भूमिका निभा रहा है। प्रसन्नता का विषय है कि भाविप्रा के नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज में 23.09.2019 से 27.10.2019 तक “एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर” अभियान चलाया गया और विभिन्न आयोजनों के माध्यम से सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग बंद करने के लिए लोगों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर ई. पत्रिका का प्रकाशन किया जाना अति प्रशंसनीय है। इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री कार्मिकों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगी और इससे पर्यावरण संरक्षण तथा कार्यालय परिसर सहित अपने घर को साफ-सुथरा रखने और उसे प्लास्टिक मुक्त बनाने हेतु प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त होगा तथा जागरूकता फैलेगी।

मुझे पूरा विश्वास है कि माननीय प्रधानमंत्री जी के उपर्युक्त आह्वान का हम सभी अनुपालन करेंगे और भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाकर देश में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपना सक्रिय योगदान देंगे।

शरणागत श्रीवास्तव
महाप्रबंधक (संचार)





संदेश

हर्ष का विषय है कि नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज ने भारत सरकार के “स्वच्छता ही सेवा-2019” कार्यक्रम के मुख्य अभियान “एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर” में सक्रिय भूमिका निभाते हुए 23.09.2019 से 27.10.2019 तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके अपने कार्मिकों के साथ-साथ आम नागरिकों के बीच इस विषय पर जागरूकता फैलाने का कार्य किया है। साथ ही संबंधित विषय पर ई. पत्रिका का प्रकाशन भी किया गया है जिसमें आयोजित गतिविधियों का विवरण व लेखों आदि का प्रकाशन करके लोगों तक देश को प्लास्टिक मुक्त बनाने का संदेश पहुंचाने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास काबिले तारीफ है।

कहा गया है कि “A healthy nation with a clean environment is a wealthy nation”. पर्यावरण न केवल मनुष्य जाति अपितु विभिन्न प्रकार के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के जीवन का आधार है। मानव सभ्यता के विकास में पर्यावरण की अहम भूमिका रही है। आज के विश्व को अपनी वैज्ञानिक प्रगति एवं तकनीकी उपलब्धियों पर गर्व है। इसमें कोई शक नहीं कि इस प्रगति और उपलब्धि से हमें विभिन्न प्रकार की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हुई है लेकिन इसने पर्यावरण के अनेक पक्षों को हानि पहुंचाकर हमारे जीवन को मुश्किल में भी डाला है। सम्पूर्ण विश्व के सामने आज पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण किए खड़ी है। प्लास्टिक प्रदूषण भी इनमें से एक है। प्लास्टिक पदार्थों से उत्पन्न कचरे का निस्तारण करना काफी कठिन होता है जिसकी वजह से यह पर्यावरण प्रदूषण का एक बड़ा कारण बन चुका है। प्लास्टिक एक नान बायो-डिग्रेडबल पदार्थ है जो पानी या मिट्टी में विघटित नहीं होता है।

प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण को रोकने का सबसे महत्वपूर्ण उपाय यही है कि कम से कम सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग करना हम बंद कर दें। खरीदारी के लिए जाते समय हम घर से कपड़े या जूट का बैग साथ लेकर जाएँ और समारोहों में प्लास्टिक के कप, प्लेट, चम्मच आदि बर्तनों की जगह स्टील, कागज और मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करें। घर में पड़ी बेकार प्लास्टिक की चीजों का पुनः उपयोग करते हुए उनसे सजावट के सामान आदि बनाकर प्रयोग में लाया जा सकता है जिससे प्लास्टिक के कचरे में कमी आएगी।

आइए हम सब मिलकर यह प्रण करें कि हम देश को प्लास्टिक कचरे से मुक्त बनाने में अपना सक्रिय योगदान करेंगे।

विक्रम कपूर
महाप्रबंधक (एटीएम)





Five years ago, the Prime Minister made a clarion call for Swachh Bharat, which started a Jan Andolan like no other. The launch of the Swachh Bharat Mission on 2nd October 2014 has transformed rural sanitation coverage from 39% in 2014 to almost 100% as of September 2019. India is on the verge of becoming Open Defecation Free by 2nd October 2019, a befitting tribute to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary.

This Independence day, the Prime Minister made another clarion call to the nation - to achieve a plastic waste free India. To further intensify the Swachhata Jan Andolan, Swachhata Hi Seva (SHS) has been celebrated annually since 2017 in the run up to Gandhi Jayanti. The campaign has mobilized crores of people every year to create awareness for Swachhata.

SHS 2019, with special focus on 'plastic waste awareness and management' was being organized from 11th September to 27th October, 2019, as the Swachh Bharat Mission (SBM) is poised to dedicate an ODF India to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary. The launch of SHS was organized jointly by the central Departments of Animal Husbandry and Dairying and Drinking Water and Sanitation and the Government of Uttar Pradesh.

PM Modi urged all citizens to rid their house, offices and work spaces from single-use plastic. He drew people's attention to the hazardous effects of single-use plastic on the environment and the health of animals and aquatic life. He appealed to people to use cloth or jute bags while going out shopping and use metal or earthen glasses for serving water in offices. The Prime Minister also asked people to collect all plastic waste from their surroundings at an identified place and ensure its proper disposal with the support of the local administration.

Calendar: SHS 2019

11 th Sep - 1 st Oct	2 nd Oct	3 rd Oct - 27 th Oct (Diwali)
जन जागरूकता, तैयारी और स्वच्छता श्रमदान	व्यापक Plastic Waste श्रमदान	समुचित निपटान
Awareness generation across towns and villages Preparation for collection, disposal of plastic waste	Nationwide shramdaan for plastic waste collection & Segregation	Recycling and effective disposal of the collected plastic waste






भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
 नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली, इलाहाबाद
स्वच्छता ही सेवा – 2019
(एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर)
(23-09-2019 से 27-10-2019)
कार्यक्रम

क्र.सं.	दिनांक	समय	कार्यक्रम / प्रतियोगिता का नाम
1.	23.09.2019	11.00 बजे	शपथ ग्रहण समारोह
2.	24.09.2019	17.00 बजे	वृक्षारोपण
3.	25.09.2019	11.00 बजे	निबंध लेखन प्रतियोगिता (स्थान: सेमिनार कक्ष) सभी कर्मचारियों, उनके पारिवारिक सदस्यों एवं प्रशिक्षणार्थियों के लिए। विषय: प्लास्टिक मुक्त भारत / Making India Plastic Free
4.	26.09.2019	11.00 बजे	भाषण प्रतियोगिता (स्थान: सेमिनार कक्ष) सभी कर्मचारियों, उनके पारिवारिक सदस्यों एवं प्रशिक्षणार्थियों के लिए। विषय: एकल उपयोग प्लास्टिक के प्रयोग को नकारें / Say No to Single use Plastic.
5.	28.09.2019		श्रमदान (सिविल लाइन्स बस अड्डे पर प्लास्टिक एकत्र करना)
6.	30.09.2019	11.00 बजे	निबंध लेखन प्रतियोगिता (केंद्रीय विद्यालय, बमरौली के 9वीं से 12वीं कक्षा के छात्रों के लिए) विषय: प्लास्टिक का प्रभावी निपटान / Effective disposal of Plastic
7.	01.10.2019	16.00 बजे	निबंध लेखन प्रतियोगिता (स्थान: सेमिनार कक्ष) (सी.ए.टी.सी. कार्मिकों के 8वीं से 12वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए) विषय: प्लास्टिक का प्रभावी निपटान / Effective disposal of Plastic
8.	02.10.2019		महाश्रमदान (भारतीय रेलवे के सहयोग से छिवकी रेलवे स्टेशन पर)
9.	04.10.2019	11.00 बजे	पोस्टर प्रतियोगिता (केंद्रीय विद्यालय, बमरौली के 5वीं से 8वीं कक्षा तक के छात्रों के लिए) विषय: प्लास्टिक मुक्त भारत / Making India Plastic Free
10.	09.10.2019	14.30 बजे	श्रमदान (कार्यालय परिसर एवं विभागों से प्लास्टिक एकत्र करके परिसर एवं विभागों को प्लास्टिक रहित बनाना)
11.	11.10.2019	16.00 बजे	क्राफ्ट प्रदर्शनी (स्थान: पुस्तकालय)
12.	15.10.2019	15.00 बजे	संगोष्ठी (स्थान: सेमिनार कक्ष) विषय: प्रयागराज में प्लास्टिक की स्थिति / Plastic Situation at Prayagraj
13.	16.10.2019	16.00 बजे	श्रमदान (कार्यालय परिसर की चारदीवारी के बाहर बाजार में प्लास्टिक एकत्र करके उस क्षेत्र को प्लास्टिक रहित बनाना)
14.	22.10.2019	16.00 बजे	पोस्टर प्रतियोगिता (स्थान: सेमिनार कक्ष) (सी.ए.टी.सी. कार्मिकों के चौथी से 7वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए) विषय: प्लास्टिक मुक्त भारत / Making India Plastic Free
15.	24.10.2019	16.00 बजे	संगोष्ठी (स्थान: सेमिनार कक्ष) विषय: बेकार प्लास्टिक का प्रबंधन / Plastic waste Management
16.	25.10.2019	16.30 बजे	ई पत्रिका का विमोचन, नाटक एवं समापन समारोह (स्थान: ऑडिटोरियम)





SWACHHTA SHAPATH

Awareness through different means is essential to successful implementation of Swachh Bharat Mission at the institute level. Swachhta hi Sewa-2019 program started with a swachhata pledge on 23.09.2019 which was administrated among the instructors, trainees, and staff members reiterating their commitment and involvement to 'Swachh Bharat Mission' focusing on making India Plastic Free.

Around a staff 150 with more than 250 trainees took the pledge to continue maintaining their surrounding area clean and hygienic and to give special focus on eradication of plastics by adopting eco-friendly methods in our daily lives and to aware others about the ill effects of the same.

Shri Atul Dikshit, Executive Director/ Principal of CATC gave the overview of the swachhta mission and the activities which will be carried out throughout this Swachhta month from 23.09.2019 to 27.10.2019 with a special emphasis on the importance of maintaining cleanliness in and around the surrounding environment where we live starting from the classroom, hostels etc. and how we can reduce the footprints of plastics in our lives and moving towards sustainable development.



Administering Swachhta Pledge





TREE PLANTATION DRIVE



Considering the manifold benefits of trees, including that they release oxygen into the air, absorb unpleasant odours as well as harmful gases such as carbon dioxide, carbon monoxide and sulphur dioxide from the air and purify it, protect us from dangerous ultra-violet rays, provide us with food and the pivotal role played by trees in preventing soil erosion, maintaining ecological balance and most especially in lessening the effects of global warming, the CATC team conducted a tree plantation drive on 24.09.2019 in which more than 100 plants of different fruits were planted in CATC Campus.

Tree plantation is not just something that should be done; instead, it is a necessity, the urgent need of the hour. Planting of trees is especially important to protect our environment against air pollution and global warming.

To end this, CATC not just maintain a lush green campus but always have been actively involved in organizing tree plantation campaigns.





AWARENESS COMPETITIONS

Various competitions in order to create awareness among employees, trainees, family members and students of Kendriya Vidyalaya were organized like Essay Competition, Speech Competition, Poster Competition etc. on the theme of “Making India Plastic Free”.



Awareness Competitions





प्रयागराज बस स्टेशन पर स्वच्छता श्रमदान



‘स्वच्छता ही सेवा-2019’ कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 28 सितम्बर, 2019 को नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज के कर्मिकों एवं प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सिविल लाइन्स बस अड्डा, प्रयागराज पर प्लास्टिक की बेकार फेंकी पड़ी वस्तुओं का संग्रहण किया गया और वहाँ पर साफ-सफाई की गई व एकत्रित किए गए प्लास्टिक व कचरों के निपटान हेतु उसे नगर निगम को सौंप दिया गया ।

इस अवसर पर श्री अतुल दीक्षित, कार्यपालक निदेशक ने स्वयं वहाँ पर उपस्थित होकर इस पूरे अभियान का नेतृत्व किया। उनके साथ श्री शरणागत श्रीवास्तव, महाप्रबंधक (संचार) एवं इस आयोजन के नोडल अधिकारी श्री मुकेश चंद्र उपाध्याय, उप महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी-विद्युत) तथा उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के अधिकारी श्री अनवर व श्री मनोज शर्मा तथा सीएटीसी के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों व कर्मचारियों ने श्रमदान करके बस अड्डे के पूरे परिसर की सफाई की तथा परिसर को एकल प्रयोग प्लास्टिक से मुक्त किया ।





सभी यात्रियों को भी इस अभियान के उद्देश्य से अवगत कराया गया एवं भारत सरकार की “प्लास्टिक मुक्त भारत” मुहिम के अंतर्गत प्लास्टिक के प्रयोग से होने वाले नुकसानों एवं एकल प्रयोग प्लास्टिक के प्रयोग को रोकने हेतु आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा की गयी ।



एक कदम स्वच्छता की ओर





SWACHHTA MAHASHRAMDAAN AT CHEOKI RAILWAY STATION, N.C.R

From Runway to Railway- For Plastic free India

Both Indian Railways and Airports Authority of India (AAI) cater to transportation need of the nation through different mode of transportation i.e. through Rail and Airways respectively. On the occasion of 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi (2nd October 2019) both the departments came on a common platform to make Cheoki Railway Station under North Central Railway Zone, free from single use plastic and create awareness among all.

Swachhta Mahashramdaan drive was organized by Civil Aviation Training College (CATC) in cooperation with Indian Railways and with constant support of Sh. Amitabha, DRM (NCR) to make a swachh Cheoki railway station with special focus on eradication of Single use Plastics.

More than hundred employees and trainees of CATC along with Railway staff participated in the





Mahashramdan to make railway tracks and platforms free from plastics. Volunteers also interacted with passengers to make them aware about the harmful effects of single use plastic and encouraged them to consider all public places as their home and to take initiatives in its cleanliness. Volunteers not only cleaned the platforms and railway tracks but also collected Plastic garbage throw away there. The whole activity was carried out under the supervision of Sh. Atul Dikshit, Executive Director along with Station Master, Cheoki Station and senior officials of CATC & Indian Railways.







SWACHH OFFICE

CATC believes in living a Swachh life and provides the same to its trainees and visitors by giving Swachh Classrooms & Labs, Swachh Toilets, Swachh workspace, Swachh Residential area, Swachh Parks, Swachh Cafeteria, Swachh Gymnasium Swachh Playgrounds, Swachh Common rooms etc. in order to build a healthy and Swachh mind to learn and develop collectively.





प्लास्टिक क्राफ्ट प्रदर्शनी

‘एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर’ विषय पर दिनांक 14/10/2019 को क्राफ्ट प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें कार्मिकों व उनके परिजनों तथा कार्मिकों के कक्षा 4 से 7 तक एवं 8वीं कक्षा से ऊपर के बच्चों द्वारा बेकार पड़ी प्लास्टिक का प्रयोग करते हुए

उनसे बनाए गए सजावट के घरेलू सामानों को प्रदर्शित किया गया। इसमें उपर्युक्त तीनों समूहों में प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और तीनों समूहों में सर्वश्रेष्ठ 3 प्रविष्टियों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार देने की घोषणा की गई।





ANTI-PLASTIC AWARENESS CAMPAIGN



More than 50 trainees and staff marched through the nearby markets and village area of CATC Campus on 18.10.2019 in order to create awareness among the citizens on ill effects of indiscriminate use of plastics with a special focus on Single-use plastics.



Trainees carried placards with messages of save environment. During the 2.5 km rally, they distributed pamphlets on 'Refuse-Reuse-Recycle Plastic' and explained people on the need of environmental protection.





Employees also talked to street vendors and shop owners regarding their views on idea of “Ban on Single-use Plastic” and how they are arranging alternates to compensate the use of plastics in their occupation. They were also urged to aware others and their customers to avoid plastic and start adopting environment friendly habits so as to make significant contribution in making this campaign a successful one.



Administering Swachhta Awareness Rally with cleaning of nearby village and market





Seminar on

PLASTIC WASTE MANAGEMENT

Like any other country, waste management is a pressing issue in India, especially with the unceasing growth of consumerism throughout the nation. Interestingly, almost 60 per cent of the total plastic waste generated in India gets recycled while the remaining escapes into the environment. However, most of this plastic is down-cycled. At this juncture, India needs robust and stringent waste management tools to substantially improve the situation.

Considering the importance of Plastic waste Management in our daily lives and how new technologies and innovations are providing eco-friendly alternatives for plastics especially Single-use plastic, a seminar was organized for all employees, trainees and their family members at CATC on 24.10.2019 in which Prof. Dr. R.C. Vaishya of Civil Engineering Department, Motilal Nehru Institute of Technology, Allahabad gave insights about the long-term impacts and overall problem of the issue which can be addressed only by establishing better waste management systems viz, by improving source segregation; designing an effective municipal solid waste (MSW) plans; ensuring collection and transportation of segregated waste and encouraging the country to identify and use affordable plastic alternative products.

Dr. R. C. Vaishya made his mark in the scientific community with the contributions and widely recognition from honourable subject experts around the world. Dr. R. C. Vaishya has received several awards for the contributions to the scientific community. Dr. R. C. Vaishya major research interest involves Water & Wastewater Treatment Technologies, Urban Governance, Municipal and Biomedical Waste Management. Air/Water Quality Monitoring and Surveillance, Rural & Urban Water Management, Rural Hygiene and Sanitation, Water Supply Project Management.

एक कदम स्वच्छता की ओर





Disposal of collected waste

Did you know, India generates more than 15,000 tonnes of plastic waste per day ?

For a sizeable impact to take place in curbing plastic pollution, it is imperative that all stakeholders - government, industries, communities and individuals - come together to play their part.

As a socially responsible organization, we have always supported policies that drive reduce, reuse, recycling and recovery of plastic.

In this whole event of Swachhta hi Sewa all the plastic collected from various shramdaan activities were handed over to Nagar Nigam, Prayagraj for proper disposal of collected plastic waste.





नाट्य प्रस्तुति : प्लास्टिकासुर का वध

"प्लास्टिकासुर वध" नाटक के मंचन से नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज, बमरौली द्वारा आयोजित एक माह तक चलने वाले प्लास्टिक कचरा निस्तारण जागरूकता कार्यक्रम के दिनांक 25.10.2019 को आयोजित हुए समापन समारोह में "विनोद रस्तोगी स्मृति संस्थान", प्रयागराज के कलाकारों ने "श्री अभिलाष नारायन" द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक "प्लास्टिकासुर वध" के माध्यम से प्रदर्शित किया कि कैसे प्लास्टिक और पॉलिथीन कचरा ब्रह्मांड के पंच तत्वों को प्रभावित कर रहा है और कैसे ये हमारे जीवन को नष्ट कर रहा है। नाटक के अंत में भारत माता प्लास्टिकासुर का वध करती हैं तथा ये संदेश देती हैं कि इसका उचित निस्तारण एवं प्रबंधन ही समस्या का समाधान है।



लोक शैली में प्रस्तुत नाटक में पार्श्व स्वर दिया था अजय मुखर्जी ने तथा संगीत संचालन शुभम वर्मा का रहा। प्रकाश संचालन अंकित कश्यप एवं रजत कुशवाहा का रहा। भाग लेने वाले कलाकार थे - अक्षत, सौरभ, सुधांशु, गौरव, सोमा, मनीष, ऋषि, अमन, शिवम एवं आशीष।





A Hygienic and Plastic free Environment for Mother and Child



"A sanitation in community is more important than independence. Sanitation is common spiritual effort in community like ours and it is basic human right"

Mahatma Gandhi

India has registered a sustained economic growth in the last few years but it still faces a huge economic loss due to poor hygiene and sanitation. Inadequate sanitation poses a serious issue for economic growth of the country by manifesting itself in the form of poor health, death, losses in education and overall productivity and wellbeing of its people. According to world bank India loses 6.4 per cent of GDP annually because of this particular reason.

The sanitation is beyond cleanliness. The concept of sanitation is comprehensive one including effective management (collection, treatment and disposal/recovery, reuse or recycling) of human waste, solid waste (including bio degradable and non-degradable trash/rubbish), waste water, solid sewage effluents, industrial waste and hazardous wastes (such as hospital chemical, radioactive, plastic or other dangerous) the standard of sanitation in a society is closely inter related to hygiene and public health in it including extent of disease and to attainable standard of longevity and thus to the productivity level of the society.

Water, sanitation and hygiene are basic need for child health. For children under five, water and sanitation related disease are one of the leading cause of death over 800 children die from preventable diseases caused by poor water and sanitation.

The advent of fuel based plastics has revolutionized the industrial world and there is no area of manufacturing which is untouched by plastics. Convenience and cost factors have pitched plastics as the most preferred material of choice till recently, a rethinking about its impact on environment and sustainability is slowly putting a brake on its continued use. While cheap petroleum fuels from which most plastics are derived was once justified to introduce them in place of traditional materials like glass and metals, this plea cannot hold any more since the cost of non-renewable fossil fuels increased several fold during the last 3 decades.

We live lives of convenience. We can buy and throw things away without much trouble. Our throwaway lifestyle is considered a sign of progress. Is it?

It turns out that we are exposed to more chemicals than ever before in history, both in the air we breathe, water we drink and the products we use. Most of the tens of thousands of chemicals we're exposed to are not regulated. Some of these chemicals are endocrine disruptors, which means that they can enter our bodies and alter hormone activity, neurobiological development and overall wellbeing.

Here is one example. Polyvinyl chloride (PVC) is the third most widely produced plastic in the environment. We are constantly exposed to it inhalation of PVC dust, ingestion (in water and food) or through touch (entering the skin).

Two populations that are particularly at risk from plastic's effects include children and pregnant women.





Children

From a developmental standpoint, we are born highly immature with many systems to be developed after birth. These include self-regulatory systems, such as the ability to regulate body temperature, metabolism, sleep cycles and heart rate. In order for our brains to develop these systems, we need attuned caregivers who keep us in optimal arousal while these systems complete themselves. Our early social and physical environments determine how effectively and efficiently these systems develop, making infancy a critical time in development. If the foundation for healthy brain development is not laid at an early age, there will be downstream effects that can impact the health and happiness of the child throughout life.

Chemicals in a child's surroundings are part of the environment that shapes the expression of genes and the trajectory of the child's life. Toxins that children come in contact with can have long-term consequences on their wellbeing. We focus on PVC.

Polyvinyl Chloride (PVC) Exposure in Childhood

PVC is used in the making of plastic toys and teething rings, which means that many infants come in contact with it on a daily basis. PVC can leach out of toys and be ingested when the infant puts the toy in the mouth, enabling it to enter the bloodstream. Once in the child's body, PVC may alter neurobiological development, possibly undermining growth hormones, sex hormones and hormones linked to appetite and satiety, leading to obesity (Berger et al. 2015).

PVC has also been detected in school supplies, like folders, binders and backpacks, indicating that not only are infants at risk of exposure but so are our school-aged kids.

In addition to being an endocrine disruptor, PVC has been found to play a role in allergies and asthma. More specifically, the phthalate molecule of PVC has the capacity to seep out of plastic toys and settle in water, soil, dust or food. The presence of the toxin in the environment can then enter airways and produce unwanted effects. These effects include irritation of the airways and lungs, which can lead to asthma (ibid). Furthermore, phthalate can act as an allergen and cause allergic reactions when inhaled.

Other plastics can have endocrine disruption effects, too:

"Chemicals that mimic or antagonize the actions of naturally occurring estrogens are defined as having estrogenic activity (EA)" and "chemicals having EA can produce many health-related problems, such as early puberty in females, reduced sperm counts, altered functions of reproductive organs, obesity, altered sex-specific behaviours, and increased rates of some breast, ovarian, testicular, and prostate cancers." (See the whole article here; See a summary of the article here).

There is now evidence that BPA also affects social functioning, decreasing social capacities over multiple generations in mice. Withdrawal from social connection is a plague among US adults, associated with health problems and early death.

WHAT TO DO

- Understand which plastics are worrisome.





Plastics may look inert, but the chemicals inside them are not. There are chemicals used in plastics that are not tightly bound to the material, which means they easily leach away, especially when plastics are heated or hot contents are put into them. The types of chemicals in plastic that cause most concern are phthalates and bisphenols. Phthalates, which are typically added to plastics to make them pliable and soft, have been called “the everywhere chemical.” They’re found in children’s toys, plastic food wrap, vinyl flooring and personal care products like deodorants, nail polish, hair gels, shampoos, soaps and lotions. Bisphenols, including the most commonly known bisphenol-A (BPA), are more typically found in hard polycarbonate plastics such as water and juice bottles, food containers, eyeglass lenses and the linings in food and soda cans.



A large body of research suggests that phthalates and bisphenols can act as endocrine disruptors, meaning that they either mimic hormones in the body or interfere with their action. Even low blood concentrations can have an effect. They can impact multiple organs at once, especially during sensitive periods of development like fetal development, infancy and early childhood. The chemicals can pass from mother to fetus during pregnancy and to her baby via breast milk.

- Understand why you should reduce your exposure.

The more steps there are between farm and table, the more chances for chemicals found in things like plastic tubing or storage containers to find their way into your food.

- Prioritize fresh, whole foods.

Bisphenols lurk in the linings of cans, so soups and sauces that are packed in cartons tend to be safer choices; as are fresh or frozen fruits and veggies.

- Avoid using certain types of plastic containers

Bisphenols can hide in the plastics we use to store food and drinks, so when possible, use metal or glass versions of baby bottles, sippy cups, food storage containers and water bottles. The Food and Drug Administration, USA banned BPA from baby bottles and sippy cups in 2012 and in infant formula packaging in 2013.”

- Avoid heating plastics.

Warming plastics by heating them in the microwave, using them for hot foods or washing them in the dishwasher can increase the chance that harmful chemicals will leach from them and end up in your food or liquid.

- Reduce exposure to dust

Phthalates can be found in glues, adhesives (such as those found on tape), carpet backings, vinyl shower curtains and floors, and other soft pliable plastics. These chemicals can wind up in the dust in your home. Cleaning up phthalate-containing dust is even more important when you have a baby crawling around. “Infants and very young children consume a lot more dust and dirt than we do just because of their hand to mouth activity.

- Swap out vinyl products.





If you have a vinyl shower curtain, anti-slip bathtub mats, baby play mats and place mats switching to one made with fabric is an easy way to reduce phthalates in your home.

- Reduce exposures from toys.

Phthalates used to be in soft plastic toys. If your baby is in that stage from 6 months to a year when they want to put everything in their mouth, try to direct them toward wooden or silicone toys.

- Take care with personal care products

Cosmetics, nail polish, shampoo, body wash, lotions and powders, including those made for babies, often contain phthalates.

Conclusion

Given the range of external factors that impact female fertility and general health, as well as the development and well-being of babies and children, it has never been more important for women to be aware of the environment in which they live. Chemical exposures are in the food we eat, the water we drink and the air we breathe. They are found in the personal products of our daily lives. Recommendations include rinsing all produce in water, consuming pesticide-free products, avoid heating in plastic in microwaves, reviewing personal care products for EDCs like phthalates, and avoiding cooking in teflon pans.

Jan Andolan with massive participation will create a sense of responsibility across society. Woman can active agents for bringing behavioural change in the society. They are considered for to be carriers of culture tradition and history and identifying with shaping the behaviour of children. hey have ability to procreate children and the same time create culture.

(Aakanksha shukla)
Kalyanmayee Member





एकल उपयोग प्लास्टिक वरदान या अभिशाप

धूप-छाँव, रात-दिन की तरह जीवन के हर कार्य के दो पहलू होते हैं। इसी तरह ज्ञान-विज्ञान के भी दो पहलू होते हैं। आज हम जिस प्रकार का जीवन जी रहे हैं, उसमें कदम-कदम पर विज्ञान के अच्छे-बुरे, वरदान या अभिशाप दोनों पहलुओं के दर्शन होते हैं। सत्य तो यह है कि विज्ञान की खोजों और आविष्कारों की प्रक्रिया वास्तव में मानव की भलाई के लिए ही आरम्भ हुई थी। आरम्भ से लेकर आज तक विज्ञान ने मानव-जाति को बहुत कुछ दिया है जिससे उनके जीवन क्रम में बहुत बदलाव आया है।

विज्ञान की इन्हीं खोजों में से एक है प्लास्टिक। प्लास्टिक संश्लेषित अथवा अर्धसंश्लेषित कार्बनिक ठोस पदार्थों के एक बड़े समूह का सामान्य नाम है। इससे बहुत सारे औद्योगिक उत्पाद निर्मित होते हैं। प्लास्टिक प्रायः उच्च अणुभार वाले बहुलक होते हैं। प्लास्टिक शब्द लैटिन भाषा के प्लास्टिकस तथा ग्रीक भाषा के शब्द प्लास्टीकोस से लिया गया है। जिसका अर्थ है मजबूत और लचीला पदार्थ।

आजकल आए दिन हम समाचार पत्रों, मीडिया, रेडियो आदि दूरसंचारों में सिंगल यूज प्लास्टिक का नाम सुन रहे हैं। सिंगल यूज प्लास्टिक यानि एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाने वाली प्लास्टिक। इसकी खोज मनुष्य की जरूरतों को देखते हुए हुई थी और देखते ही देखते यह दैनिक जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया।

सिंगल यूज प्लास्टिक चर्चा में तब आया जब कुछ समय पहले दक्षिणी स्पेन के समुद्री तट पर बहकर आई एक मरी हुई स्पर्म व्हेल दिखी। उसकी जाँच से पता चला कि उसके पेट और आंतों में जमे 64 पाउंड के प्लास्टिक के कचरे ने उसकी जान ले ली थी। इस घटना ने लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या सही में हमारी पृथ्वी हानिकारक प्लास्टिक कचरे के सैलाब से भर गई है। आश्चर्य की बात तो यह है कि हमारी दिन-प्रतिदिन की जिंदगी में प्लास्टिक इस प्रकार प्रवेश कर गई है कि इसके बिना ज्यादातर काम असंभव से दिखते हैं। दूरदराज के आइलैंड से लेकर आर्कटिक तक में ऐसी कोई जगह नहीं जहां प्लास्टिक मौजूद न हो। अगर यही ट्रेंड रहा तो 2050 तक हमारे महासागरों में मछलियां कम प्लास्टिक ज्यादा होंगी।



प्लास्टिक से जुड़े मुख्य तथ्य

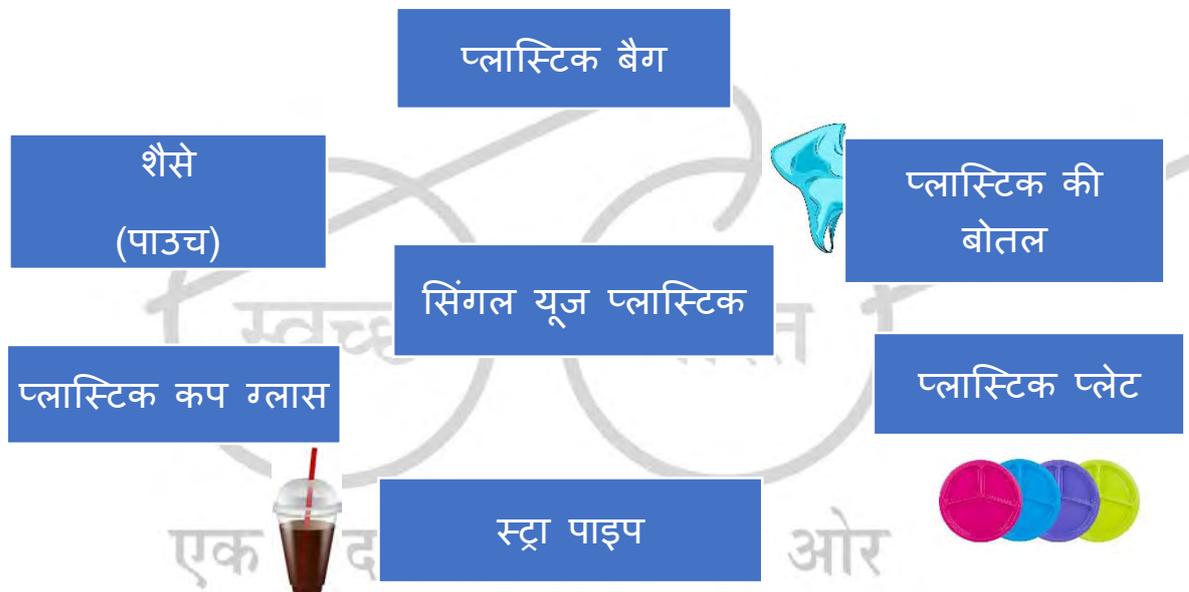
- ▶ प्लास्टिक, रसायनिक पदार्थों के छोटे-छोटे यूनिट से मिलकर बना एक बड़ा यूनिट है जो पॉलीमर कहलाता है।
- ▶ वन टाइम यूज वाले प्लास्टिक पर हमारी निर्भरता का बढ़ना चिंता का विषय है।
- ▶ प्लास्टिक का वह गुण जो पर्यावरण के लिये खतरा पैदा कर रहा है वो है इसका नॉन-बायोडिग्रेडेबल होना। जो पदार्थ बैक्टिरिया और प्राकृतिक प्रक्रियाओं से अपघटित नहीं होते उन्हें नॉन-बायोडिग्रेडेबल कहते हैं। बायोडिग्रेडेबल पदार्थ का अपघटन प्राकृतिक





प्रक्रियाओं द्वारा संभव होता है । प्लास्टिक अपघटित होने में कई साल लेता है इसलिये इसे इकोफ्रेंडली नहीं माना जाता । यह पर्यावरण में मिलकर उसे प्रदूषित करता है ।

- ▶ इनके जलने की प्रक्रिया भी बहुत धीमी होती है और आसानी से पूरी तरह जलते भी नहीं हैं । जलाने पर यह विषैले गैसों को छोड़ता है जो वायु प्रदूषण का कारण बनता है । प्लास्टिक प्रदूषण से प्रकृति, वन्य जीव और यहाँ तक कि हमारे स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है ।
- ▶ सिंगल यूज प्लास्टिक यानि एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाने वाली प्लास्टिक सबसे खतरनाक प्लास्टिक है । इसमें बड़ा हिस्सा एक बार इस्तेमाल कर फेंक दी जाने वाली पन्नियों, बोतलों व खाने-पीने के सामान के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले डिस्पोजबल का है ।



विभिन्न प्रकार के सिंगल यूज प्लास्टिक

विभिन्न प्रकार के सिंगल यूज प्लास्टिक एवं उनके विकल्प

प्लास्टिक के बैग : सिंगल यूज प्लास्टिक में सबसे बड़ा योगदान इसी का है । इसका विकल्प जूट, कपड़े और मोटे कागज के कैरी बैग हैं ।

प्लास्टिक की बोतल : पैकेज्ड पानी, कुकिंग ऑइल्स की पैकिंग में इस्तेमाल होता है । इन्हें बाद में फेंक दिया जाता है । इसका विकल्प तांबे-स्टील जैसी धातुओं व काँच की बोतले हैं ।





प्लास्टिक के प्लेट व दोने : शादी, पार्टी, स्ट्रीट फूड कॉर्नर जैसी जगहों पर इनका सर्वाधिक इस्तेमाल इन दिनों हो रहा है । गंदगी का बड़ा कारण ये भी हैं । इसका विकल्प केला ढाक, कमल के पत्तों से बने दोना-पत्तल हैं ।

स्ट्रॉ पाइप : जूस पीने के लिए स्ट्रॉ पाइप का चलन तेजी से बढ़ रहा है । प्लास्टिक से बनी यह पाइप एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाती हैं । इसका विकल्प हैं कागज की स्ट्रॉ पाइप है जो सस्ती कीमत में बाजार में उपलब्ध हैं

प्लास्टिक के कप और ग्लास : चाय, पानी आदि के लिए इनका इस्तेमाल करते हैं । आयोजनों में इसका खूब उपयोग होता है । इसका विकल्प हैं कुल्हड़, काँच व मेटल के गिलास की बोतल ।

शैसे (पाउच) : हेयर ऑइल और अचार बनाने वाली कंपनियाँ शैसे में पैकिंग कर बेचती हैं । इन्हें इस्तेमाल के बाद फेंक दिया जाता है । इसका विकल्प अब तक तय नहीं हो सका है इसलिए इसके प्रतिबंध पर अभी सहमति नहीं बन पायी है ।

भारत प्रति वर्ष 94.6 लाख टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न करता है । वहीं हर साल दुनिया में करीब तीन सौ मिलियन प्लास्टिक का उत्पादन होता है जिसमें आधे से ज्यादा एक बार इस्तेमाल कर फेंक दिया जाता है । चालीस माइक्रान या उससे कम स्तर के प्लास्टिक न तो आसानी से नष्ट होते हैं और न ही रिसाइकिल होते हैं ।

इसे जमीन में दबाकर अमर नष्ट करने की कोशिश की जाती है तो वह नष्ट नहीं होता बल्कि छोटे छोटे टुकड़ों में बटकर खतरनाक रसायन पैदा करता है जो मिट्टी की उपजाऊ क्षमता को नुकसान पहुंचाता है । मिट्टी के जरिए यह खतरनाक जहरीला रसायन हमारे खाद्यपदार्थों और पानी के जरिए शरीर में जाता है जिससे मनुष्य के रोगों से लड़ने की क्षमता और जनन क्षमता को कम करता है और यह कैंसर समेत कई अन्य बीमारियों का कारण भी बनता है ।

एक कदम स्वच्छता की ओर





एक रिसर्च के मुताबिक प्लास्टिक 70 प्रतिशत हिस्सा महासागरों में फैला हुआ है । इसके गंभीर परिणाम से बचने के लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है और उसके विकल्प पर जोर देने की जरूरत है । अगर इस तरफ कोई सार्थक कदम न उठाया गया तो स्थिति भयावह हो जायेगी ।

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 12 सितम्बर, 2019 को मथुरा में स्वच्छता पर एक व्यापक देशव्यापी जागरूकता अभियान- “स्वच्छता ही सेवा 2019” का शुभारम्भ किया । “स्वच्छता ही सेवा- 2019” के अंतर्गत “प्लास्टिक कचरा जागरूकता और प्रबंधन” पर विशेष जोर दिया जा रहा है । इसका उद्देश्य स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयन्ती पर भारत को प्लास्टिक कचरे से मुक्त बनाना है । इस वर्ष (2019) की स्वच्छता ही सेवा का विषय “प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन” है ।

सिंगल-यूज प्लास्टिक हमारे दैनिक जीवन का अहम हिस्सा बन गया है । इसकी उपयोगिता और पर्यावरण प्रदूषण को देखते हुए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने स्पष्ट किया है कि सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाना संभव नहीं है बल्कि इसके बारे में जागरूकता फैला के उसके प्रयोग को कम करके काफी हद तक प्लास्टिक कचरों से बच सकते हैं । अन्ततः हम कह सकते हैं कि सिंगल यूज प्लास्टिक जहां एक तरफ मानव जीवन के लिए वरदान है तो वहीं दूसरी तरफ पर्यावरण और मनुष्य जीवन के लिए अभिशाप है । जागरूक होकर और जागरूकता फैलाकर काफी हद तक सिंगल यूज प्लास्टिक से उत्पन्न हुए दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है ।

एक कदम स्वच्छता की ओर

(सीमा यादव)

कल्याणमयी सदस्या





BIODEGRADABLE WATER BOTTLE



First time the IRCTC has taken an eco-friendly measure by using degradable bottles.

Lucknow: Passengers onboard the Lucknow-Delhi Tejas Express, the country's first private semi-high speed train were being given biodegradable packaged drinking water bottles.

Chief Regional Manager (CRM), IRCTC, Lucknow region, Ashwini Srivastava said: "At least 1,500 bottles are being served on Tejas Express every day in both up and down trips. The bottles would be in use for a few months to observe the results and check how much do they actually decompose. The bottles would be disposed of as prescribed."

This is the first time that the IRCTC, a central public sector enterprise under the Railways Ministry, has taken an eco-friendly measure by using degradable bottles.

IRCTC's big leap in curbing the use of #SingleUsePlastic - successfully tests biodegradable packaging for #RailNeer. Supply commences on a pilot basis on the newly introduced LJN-NDLS-LJN #TejasExpress. #IRCTCSaysNoToPlastic #IRCTCForEnvironment

IRCTC'S INITIATIVE FOR A BETTER ENVIRONMENT
BIODEGRADABLE PACKAGING FOR **Rail Neer**

www.irctc.co.in

265 1:56 PM - Oct 4, 2019

Each bottle is costing 15 paise extra in manufacturing, compared to ordinary plastic bottles that are normally used.

Packaged drinking water is packed in polyethylene terephthalate (PET) plastic bottle, which is non-biodegradable.

As per the IRCTC conducted a trail to make a PET bottle biodegradable by adding a biodegradable polymer to the compound. The physical and chemical properties of biodegradable polymers allow them to decompose completely when exposed to aerobic or anaerobic process or micro-organisms.

The biodegradable bottle is manufactured as a pre-form at the bottling plant and then it is blown as a bottle at another plant. The bottles have been tested at the Indian Institute of Packaging, Mumbai, and testing authorities noticed that biodegradation did occur when the bottles





Were disposed of under high-solid anaerobic digestion conditions.

Meanwhile, in a related development, the Uttar Pradesh State Road Transport Corporation (UPSRTC) has stopped providing water bottle to the passengers of the air-conditioned buses. The passengers will also not be allowed to carry their own plastic water bottles.

The decision has been taken by the UPSRTC administration after the Centre announced a ban on single-use plastic.

The UP Roadways used to provide a complimentary 500 ml packaged drinking water to the passengers of the Scania, Volvo, Pink, Janrath and Shatabdi buses.

The roadways administration has not yet made any alternate arrangement for water on the route.

According to the UPSRTC officials, shopkeepers have been asked to stop selling plastic water bottles on bus station.

(SNIGDHA DEY)
Daughter of Sh. Subhan Dey, AGM (ATM)





प्लास्टिक के अपशिष्ट प्रबन्धन में नूतन प्रयोग और चुनौतियाँ

“रुग्ण होना चाहता कोई नहीं रोग लेकिन आ गया यदि पास हो, तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या, शमित होगा वह नहीं मिष्ठान से”

- रामधारी सिंह “दिनकर”

कुछ समय पहले दक्षिणी स्पेन में समुद्री तट पर बहकर आई हुई स्पर्म व्हेल ने कई लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। उसकी जाँच से पता चला कि उसके पेट और आंतों में जमे 64 पाउंड के प्लास्टिक के कचरे ने उसकी जान ले ली थी। इस घटना ने लोगों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या सही में हमारी पृथ्वी हानिकारक प्लास्टिक कचरे के सैलाब से भर गई है। आज कचरे का प्रबन्धन, पुनः उपयोग और पुनर्निर्माण समय की मांग है। देश के वैज्ञानिक संस्थानों में नई तकनीकों एवं प्रौद्योगिकी के सहारे कचरे से निर्माण किया जा रहा है जिससे न केवल कचरे से निजात मिल रही है बल्कि कचरे से समृद्धि की ओर टिकाऊ कदम बढ़ा रहे हैं। समस्त विश्व ने चरणबद्ध तरीके से प्लास्टिक के उन्मूलन और प्लास्टिक के अपशिष्ट प्रबन्धन पर सोचना एवं कार्य प्रारम्भ कर दिया है। भारत ने सदैव विश्व कल्याण को अपने हितों से ऊपर रखा है और इसीलिए प्रधानमंत्री जी ने इसमें अग्रणी पहल की है। प्रधानमंत्री जी ने पहला कदम बढ़ाते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी की 150वीं जयन्ती 02 अक्टूबर, 2019 से एकल प्रयोग प्लास्टिक के निषेध का आह्वान किया है।

प्लास्टिक एवं पालीथिन आज अपशिष्ट प्रबन्धन में एक बड़ी समस्या है। एक रिपोर्ट के मुताबिक प्रति वर्ष 30-40 लाख टन प्लास्टिक का उत्पादन किया जाता है। हर साल करीब साढ़े सात लाख टन पालीथिन कचरे की रीसाइक्लिंग की जाती है। बाकी पालीथिन नदी, नाले और मिट्टी में जमा रहते हैं। प्लास्टिक के थैलों के इस्तेमाल से होने वाली समस्याएँ कचरा प्रबन्धन प्रणालियों की खामियों को दूर करके काफी हद तक कम की जा सकती है।

प्लास्टिक के थैले अनेक हानिकारक रंगों, रंजक और अन्य तमाम अकार्बनिक रसायनों को मिलाकर बनाये जाते हैं। इनमें से कुछ रसायन कैंसर को जन्म दे सकते हैं। इन रसायनों में कैडमियम एवं जस्ता इत्यादि प्रयोग होते हैं और उत्पादन में एथिलिन आक्साइड, बेन्जीन और जाइलींस इत्यादि उत्सर्जित होते हैं। चूँकि प्लास्टिक का गुण है कि वह परिस्थितियों को छोड़कर जल एवं हवा से प्रतिक्रिया नहीं करता और साथ ही भार में हल्का, मजबूत, टिकाऊ और मेटल की अपेक्षा सस्ता भी होता है। इसी वजह से इसका घरेलू उद्योगों एवं हेल्थ केयर इन्डस्ट्री में अत्यधिक प्रयोग होता है।

कचरे के प्रबन्धन के नजरिये से 5 R वाले सिद्धान्त यानी Reduce, Reuse, Recycle, Energy Recovery and Molecular Redesign को अमल में लाने की जरूरत है।





प्लास्टिक के अपशिष्ट प्रबन्धन में कुछ नूतन प्रयोग:

जैव अवकर्षक प्लास्टिक बनाने में सफलता

आज वैज्ञानिकों ने जैव अवकर्षण प्लास्टिक बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है जिन्हें जैविक अपघटन से समाप्त किया जा सकता है या खाद एवं जैविक कचरे में परिवर्तित किया जा सकता है। प्लास्टिक का जैव-अवकर्षण पर्यावरण में उपस्थित सूक्ष्म-जीवों को सक्रिय करके सम्पन्न किया जाता है जो प्लास्टिक झिल्लियों की आणविक संरचना के उपापचय द्वारा एक खाद सदृश मिट्टी वाले अक्रिय पदार्थ का निर्माण करते हैं और प्रकृति के लिए कम हानिकारक होते हैं।

कचरे से पेट्रोल डीजल निर्माण की प्रौद्योगिकी

वैज्ञानिक प्लास्टिक और पालीथीन के कचरे से पेट्रोल, डीजल और खाना पकाने वाली एल.पी.जी. गैस के निर्माण की तैयारी कर रहे हैं। भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के वैज्ञानिक बेन्च रिएक्टर संयन्त्र द्वारा प्लास्टिक कचरे को ईंधन में परिवर्तित करने का सफल प्रयोग कर चुके हैं और अब इस प्रयोग को विस्तार देने की तैयारी की जा रही है। इस तकनीक का बहुत बड़ा फायदा देश को ईंधन आपूर्ति में होगा और साथ ही प्लास्टिक कचरे से भी निजात मिलेगी। यह तकनीक प्लास्टिक की रीसाइक्लिंग से अधिक सुरक्षित है क्योंकि ईंधन बनाते समय किसी भी हानिकारक गैस का रिसाव नहीं होगा।

कचरा प्लास्टिक से स्मार्ट टॉयलेट टाइल्स निर्माण की तकनीक

सीएसआईआर की राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला ने प्लास्टिक कचरे से सस्ती और टिकाऊ टाइलों के निर्माण की प्रौद्योगिकी विकसित की है जिसका उपयोग कम लागत के शौचालय के निर्माण में किया जा रहा है। इस तकनीक को स्मार्ट टॉयलेट मेड ऑफ़ वेस्ट प्लास्टिक बैस नाम दिया गया है।

प्लास्टिक के कचरे से सड़क निर्माण

केन्द्रीय सड़क अनुसन्धान संस्थान ने सिफारिश की है की डामर के साथ प्लास्टिक कचरे से बनी सड़क बेहतर होगी और इससे सड़क निर्माण में होने वाला खर्च भी कम होगा। आज देश की लगभग सभी राज्यों में प्लास्टिक के कचरे से सड़क निर्माण का प्रयोग किया जा रहा है। एक टन प्लास्टिक कचरे से साढ़े तीन मीटर चौड़ी एक किलोमीटर सड़क बनाई जा सकती है एवं 10 प्रतिशत तक डामर की बचत होगी। सड़क निर्माण इत्यादि कार्यों में प्लास्टिक का उपयोग किया जा सकता है पर इसके लिए जरूरी है की कचरे को उसके श्रोत स्थल पर ही अलग-अलग कर दिया जाय। इसके लिए प्रभावी नीतियों को अपनाना होगा।





स्लो सेंड फिल्टर तकनीक से सीवेज ट्रीटमेंट

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं आई.आई.टी. रुड़की के संयुक्त प्रयासों से किए जा रहे शोध में वैज्ञानिकों ने स्लो सेंड फिल्टर नामक सस्ती, टिकाऊ व अधिक कारगर तकनीक विकसित की है। यह शोध सीवेज के गंदे पानी के सफाई से जुड़ी है जो इंसान द्वारा सीधे नदियों में डाला जाता है। विस्तार लेती शहरी आबादी व बढ़ते औद्योगीकरण के चलते सिंचाई सहित अन्य कामों के लिए पानी की जरूरत को पूरा करने के लिए सीवेज ट्रीटमेंट की जरूरत बढ़ गयी है।

रूट जोन ट्रीटमेंट यानी सरकंडे की झाड़ियों से पानी शुद्ध करने की तकनीक

भारतीय वन अनुसन्धान संस्थान देहरादून द्वारा यमुना को प्रदूषण मुक्त करने के लिए “रूटजोन ट्रीटमेंट” नामक जैविक तकनीक विकसित की गई है। इस तकनीक में आइपोमिया नामक पौधे और पानी को शुद्ध करने के लिए बैक्टीरिया कल्चर का उपयोग किया जाता है। वैज्ञानिकों के अनुशार देशभर में मिलने वाली सरकंडा या नरकट घास नदियों में प्रदूषण कम करने के लिए रामबाण हो सकती है। पानी को शुद्ध करने के लिए यह तकनीक केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से मान्यता प्राप्त है। दिल्ली विकास प्राधिकरण दिल्ली की हरियाली बढ़ाने और यमुना में गिरने वाले गन्दे नालों को प्रदूषणमुक्त करने के लिए भारतीय वन अनुसन्धान संस्थान देहरादून के मदद ले रहा है।

प्लास्टिक प्रदूषण को दूर करने के लिए एकल उपयोग वाले प्लास्टिक बैग पर रोक लगाना और प्लास्टिक के उत्पादन एवं वितरण पर नियंत्रण करना भी आज की जरूरत है। हमारी अर्थव्यस्था का एक महत्वपूर्ण भाग बन चुके इस सर्वव्यापी पदार्थ को बनाने और इस्तेमाल करने के तरीके पर जल्द दुबारा सोचने के जरूरत है क्योंकि ‘लेना-बनाना-फेंकना’ वाली अर्थव्यस्था को फिर से डिज़ाइन करके उसे चक्रीय बनाना ही एकमात्र दीर्घकालिक समाधान हो सकता है।

योगेश शुक्ल
प्रबंधक (वित्त)





Plastics

RESIST

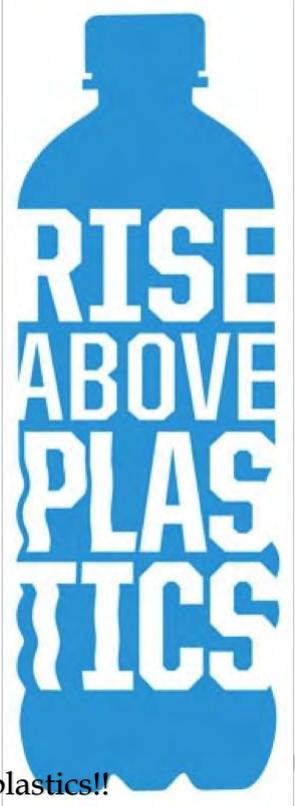


PLASTIC

Fauna is dying, Flora is dying
 Our MOTHER EARTH is crying.
 Plastics are flying here and there,
 We have to do something in next coming year.

We try to save MOTHER EARTH but,
 Plastics are taking more and more birth.
 Some plastics cannot be reused,
 Our Earth cannot be reproduced.

Say NO to single-use plastics,
 Use only recyclable or biodegradable Plastics.
 And if you want a healthier Earth,
 More and more trees should take birth.



Let's save our Earth by saying **NO** to single-use plastics!!

SAY NO TO SINGLE-USE PLASTICS



PLASTIC KILLS



9 REASONS TO REFUSE SINGLE-USE PLASTIC

- 1 Made from fossil fuels
- 2 Huge carbon footprint
- 3 Will still be here in hundreds of years
- 4 Only a tiny percentage is recycled
- 5 Leaches toxins into food & drink
- 6 Causes hormone disruption & cancers
- 7 Pollutes our oceans
- 8 Kills marine animals and birds
- 9 Enters our food chain

LESS PLASTIC.

WWW.LESSPLASTIC.CO.UK

Created by Snigdha Dey

(SNIGDHA DEY)
 Daughter of Sh. Subhan Dey, AGM (ATM)





प्लास्टिक मुक्त भारत

(प्रथम पुरस्कार)

परिचय के क्रम में 'पारिस्थितिक असंतुलन' आज हमारे लिये एक बड़ी चुनौती के रूप में उभर कर सामने आ रहा है, जिस प्लास्टिक को हम बड़ी शान से अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना चुके हैं वह हमारी ही नसों में पेबस्त होकर हमें खोखला बना रहा है। रसायन विज्ञान की यह खोज आज मानवीय सभ्यता के लिए धीमा जहर बन चुका है। मानव जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा बन चुका प्लास्टिक आज हमारे लिये एक बड़ा संकट बन चुका है, आज के इस दौर में धरती को अपने 'बाशिंदों' से ही खतरा है। उ. प्र. के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने इस खतरे को 'रक्तबीज' की संज्ञा तक दे दी है, जिसके बीज से नित नये राक्षस पैदा हो रहे हैं।

प्लास्टिक संश्लेषित अथवा असंश्लेषित उच्च अणुभार वाले कार्बनिक बहुलक होते हैं, इस शब्द की उत्पत्ति प्लास्टिककोज शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'नमनीय पदार्थ' जिसे आसानी से किसी भी आकार में ढाला जा सके। रसायनों में सबसे पहला प्लास्टिक एल.एच. बेंकलैंड के द्वारा बनाया गया, इसका नाम इन्हीं से प्रेरित होकर बेकेलाइट रखा गया। भारत में प्लास्टिक का प्रवेश 60 के दशक में हुआ था। आर्थिक उदारीकरण एवं उपभोक्तावाद की संस्कृति के चलते आज यह बड़े पहाड़ की शक्ल में बदल चुका है।

भारत में प्रति वर्ष 94.6 लाख टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। वैश्विक स्तर पर ये आँकड़े और भी अधिक भयावह हैं। प्रत्येक वर्ष सम्पूर्ण विश्व में 500 खरब प्लास्टिक बैग इस्तेमाल किए जाते हैं और प्रति मिनट 20 लाख बैग। लगभग एक लाख जीव-जन्तु प्रति वर्ष पूरे विश्व में प्लास्टिक अपशिष्ट के कारण मर जाते हैं। पूरे विश्व के तेल का आठ प्रतिशत तेल प्लास्टिक उत्पादन में खर्च हो जाता है।

आज प्लास्टिक हमारे दैनिक उपयोग की वस्तु बन गया है, सस्ता, हल्का, ताप-विद्युत एवं कंपन शोर प्रतिरोधी तथा कम जगह घेरने के कारण इसने यकीनन धातुओं की जगह ले ली है। टिकाऊपन तथा मनभावन रंगों में उपलब्ध होने की वजह से प्लास्टिक हमारी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बन चुका है, किन्तु प्लास्टिक एक गैर पुनर्नवीनीकृत पदार्थ है (नॉन बायोडिग्रेडेबल), जो बैक्टीरिया द्वारा ऐसी अवस्था तक नहीं पहुँच सकता जिससे पर्यावरण को कोई नुकसान न हो।

प्लास्टिक को फेंकना एवं जलाना दोनों ही पर्यावरण के लिये नुकसानदायक है, प्लास्टिक को जलाने से उत्सर्जित रसायन धसन प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। प्लास्टिक का अत्याधिक प्रयोग सफाई एवं सीवरेज व्यवस्था को बिगाड़ता है। लंबे समय से मिट्टी में दबे होने पर यह मिट्टी की उपजाऊ क्षमता तथा जल सोखने की क्षमता दोनों को प्रभावित करता है, जिसका असर भूजल स्तर पर पड़ रहा है।

निष्कर्षतः प्लास्टिक के बहुत अधिक प्रयोग से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान को कम करने की दिशा में इंसान को कुछ सख्त कदम उठाना अति आवश्यक है। 'सतर्कता एवं जागरूकता' दो ऐसी बेहद जरूरी संभावनाएं हैं, जिनके अनुपालन से इस





समस्या के उन्मूलन में सहायता मिलेगी। 'सरकार एवं समस्त पर्यावरणीय संस्थाओं' के प्रयास के अलावा व्यक्तिविशेष की भी कुछ खास जिम्मेदारियाँ हैं जैसे -:

1. प्लास्टिक बैग को संभाल कर रखे, इन्हें कई बार इस्तेमाल करें।
2. कपड़े तथा जूट से बने थैले साथ लेकर चलें
3. एकल प्रयोग की जाने वाली प्लास्टिक जैसे पॉलिथिन, पतले ग्लास तथा स्ट्रॉ आदि का प्रयोग कम करें।
4. प्लास्टिक के पी.ई.टी.ई. (P.E.T.E.) तथा एच.डी.टी.ई. (H.D.T.E.) प्रकार का सामान उपयोग करें क्योंकि ये आसानी से रिसाइकिल हो जाते हैं।
5. प्लास्टिक व्यर्थ ही यदा-कदा न फेंके इसे रिसाइक्लिंग सेंटर तक पहुँचाने की पूर्ण व्यवस्था करें।
6. पारंपरिक कुल्हड़, दोना-पत्तल का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा अन्यों को प्रेरित करें।

कुल मिलाकर प्लास्टिक सभी जीव-जंतुओं तथा मनुष्यों सभी के लिए बेहद हानिकारक है और इस समस्या से सिर्फ सतर्कता एवं जागरूकता से ही छुटकारा पाया जा सकता है। 90 के दशक में मणिपुर के इंफाल में 'सदोपक्कम गुणाकांता' एवं उनके बेटे ने प्लास्टिक की बोतलों को रिसाइकिल करने के लिए रिसाइक्लिंग प्लांट कि मशीन लगाई। हिमाचल प्रदेश ने 'केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड' की मदद से पत्तियों को चक्रित करके सड़क निर्माण का कार्य किया है। 40 माइक्रॉन से कम पतली पॉलिथिन का प्रयोग करके उत्तम किस्म की खाद बनाई जा सकती है। कई देशों ने प्लास्टिक का प्रयोग कर बिजली बनाने की तकनीक भी विकसित की है। ये सभी प्रयास सराहनीय हैं।

स्मरण रहे कि दिन प्रतिदिन बढ़ता हुआ प्लास्टिक अपशिष्ट हमारे वर्तमान के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे भविष्य के लिए भी खतरनाक है। यह हमारे देश की गंभीर समस्या है जिसका निदान हम सभी को एकजुट होकर ही करना होगा। व्यापक अभियान चलाने होंगे तथा उनमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सहभागिता भी सुनिश्चित करनी होगी। हर एक मन को प्रण करना होगा।

पर्यावरण को हमें ही बचाना है।
प्लास्टिक मुक्त भारत अब हमें बनाना है।

(विनीता स्वर्णकार)

कल्याणमयी सदस्या





प्लास्टिक मुक्त भारत

(द्वितीय पुरस्कार)

प्लास्टिक पर्यावरण के लिए ही नहीं, बल्कि मानव जीवन के लिए भी खतरनाक है। इसका आविष्कार सन 1907 में किया गया था। इसके खोजकर्ता का कहना था कि एक दिन यह एक नये भारत का निर्माण करेगा। यह न तो गलेगा न ही पिघलेगा, मतलब यह किसी भी तरह नष्ट नहीं किया जा सकेगा।

“स्वच्छता ही सेवा” के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने देश को पूरी तरह से प्लास्टिक मुक्त करने का संकल्प लिया है। एयरपोर्ट्स अथॉरिटी आफ इंडिया ने इस पहल को गंभीरता से लिया है। आज हमारे देश के करीब 55 एयरपोर्ट प्लास्टिक मुक्त हो गए हैं। चंडीगढ़ समेत अभी हाल ही में 20 एयरपोर्ट प्लास्टिक मुक्त हो चुके हैं। पहले चरण में 33 एयरपोर्ट प्लास्टिक मुक्त किये जा चुके हैं।

प्लास्टिक मानव जीवन, पर्यावरण के साथ-साथ जानवरों, पक्षियों व जलीय जन्तुओं के लिए बहुत ही हानिकारक है। प्लास्टिक कचरों के कारण बहुत से समुद्री जीव विलुप्त होने के कगार पर हैं। प्लास्टिक से उत्सर्जित होने वाली गैसों हमें दिखाई तो नहीं देती किन्तु यह पक्षियों की विलुप्त होती प्रजातियों के लिए काफी हद तक जिम्मेदार हैं।

आज हमारे देश के करीब 450 जिलों को पूर्ण स्वच्छ घोषित किया जा चुका है जो किसी न किसी रूप से प्लास्टिक विकल्प तैयार कर लिए हैं। गृहस्थी के सामान जैसे सब्जी, फल इत्यादि के लिए प्लास्टिक की बजाय दूसरे विकल्प अपना रहे हैं।

WHO के अनुसार यदि हम अपने आस-पास सफाई रखते हैं तो प्रतिवर्ष लगभग 3 लाख लोगों का जीवन बचा सकते हैं, करीब 30 प्रतिशत डायरिया को सफाई के माध्यम से कम किया जा सकता है। इन सब सफाई के माध्यम में प्लास्टिक सबसे अहम है। हम अपने घर के कचरे इत्यादि के लिए भी प्लास्टिक की थैलियों का इस्तेमाल करते हैं। इनके अलावा पीने का पानी, खाने को फ्रिज में रखने आदि कामों में हम प्लास्टिक का किसी न किसी रूप में प्रयोग करते हैं।

प्लास्टिक से होने वाली बीमारियों में कैंसर प्रमुख है। इसके अलावा बच्चों व बुजुर्गों में सांस की बीमारी व स्किन से संबन्धित बीमारियाँ प्रमुख हैं। इसके अलावा जब यह कचरे के रूप में नालियों में जमा होता है तो विभिन्न प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है।

विभिन्न प्रकार की बीमारियों के अलावा यह पर्यावरण को कई तरह से प्रभावित करता है। जिसमें 'ग्लोबल वार्मिंग' प्रमुख है। इसके कारण हर वर्ष लगभग डिग्री 1 सेंटीग्रेट तापमान बढ़ रहा है। तापमान बढ़ने से ग्लेशियर पिघलेगें जिसके कारण समुद्र की जलस्तर बढ़ेगा और तटीय भागों के डूबने की आशंका रहेगी।





क्लेशियर के अलावा यह हमारे पर्वतीय क्षेत्रों की खूबसूरती को भी कम कर रहा है । आज पहाड़ों पर जाने पर हमें पहले जैसी न तो खूबसूरती दिखती है न ही शुद्ध व ताजी हवा मिलती है । प्लास्टिक हमारे जलवायु परिवर्तन के चक्र को भी प्रभावित करता है । आज कभी ठंड पहले आ जाती है या बारिस कम, ज्यादा होती है या गर्मी पहले शुरू हो जाती है । प्लास्टिक से उत्सर्जित होने वाली गैसों हमारी ओज़ोन लेयर को भी नुकसान पहुँचाती है जो हमें सूर्य की हानिकारक किरणों से बचाती है । प्लास्टिक किसी न किसी रूप में हमारी दिनचर्या में प्रयोग हो रहा है । यह रिसाइकिल भी नहीं होता है ।

अतः आज स्वच्छता सेवा के अंतर्गत हमें यह संकल्प लेना होगा कि हम न तो प्लास्टिक का उपयोग करेंगे न ही किसी और को करने देंगे । यह हमारे सत्याग्रहियों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी । हमारे महापुरुषों ने जिस भारत का सपना देखा था वह हम अपनी सच्ची लगन व तपस्या से प्लास्टिक मुक्त भारत बनाकर करेंगे ।

हम यह सबसे कह सकेंगे कि

सबसे न्यारा सबसे प्यारा
प्लास्टिक मुक्त है देश हमारा ।

स्वच्छ

भारत
धन्यवाद ।

एक कदम स्वच्छता की ओर (राजेश कुमार यादव)

प्रबंधक (एटीएम)





प्लास्टिक मुक्त भारत

(तृतीय पुरस्कार)

प्लास्टिक हमारे जीवन में इतना अंदर घुस चुका है कि लगता है हम बिना इसके कोई काम कर ही नहीं पायेंगे। सब्जी लेना है तो प्लास्टिक, फल लेना है तो प्लास्टिक, राशन लेना है तो प्लास्टिक। क्या कमाल है। घर से कपड़े की थैली लेकर चलना जैसे हमारे सम्मान पर आंच आने जैसा हो गया है। अगर इसी तरह हम प्लास्टिक का उन्मुक्त प्रयोग करते रहे तो वो दिन दूर नहीं जब हम 'प्लास्टिक नामक ऊँचे पहाड़' पर बैठे होंगे और धरती बंजर हो जायेगी। लोग भूखों मरने लगेंगे। इस परिस्थिति के जिम्मेदार केवल और केवल हम होंगे।

हमारा देश भारत सदियों से हरा-भरा रहा है, जिसमें ऋषि-मुनियों ने अपना योग इत्यादि किया है। उन्होंने पेड़ पौधों के बीच रहकर हमारे पर्यावरण को समृद्ध किया। लेकिन आज परिस्थितिया पूर्णतः विपरीत हो चुकी है। हम औद्योगीकरण के अंधानुकरण में प्लास्टिक को अपने पर्यावरण में प्रवाह कर रहे हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियों का प्लास्टिक प्रयोग में तो अति ही कर दिया है। पाँच रुपये के सामान से लेकर हजारों रुपये तक में प्लास्टिक ही प्लास्टिक। इनके वजह से बेरोजगारी भी बढ़ी है। हमारे छोटे लघु उद्योग जैसे कागज, बोरा इत्यादि बंद होने के कगार पर है। चूंकि हमारे देश में अल्प-शिक्षित लोगों की संख्या ज्यादा है, अतः कई-कई घरों में बेरोजगारी की वजह से भुखमरी जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी है। हमारी पिछली सरकारों ने भी प्लास्टिक के प्रयोग को रोकने के लिए कोई कड़ा कदम नहीं उठाया, जिसका खामियाजा यह हुआ की हम आज कूड़े के ढेर पर खड़े दिखाई देते हैं।

प्लास्टिक केवल कूड़ा ही नहीं है, बल्कि जहर है, जो सदियों तक हमें काल का ग्रास बनाता रहेगा। हम भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं। हमारी वर्तमान सरकार ने प्लास्टिक मुक्त भारत के लिए जो आंदोलन चलाया है, यह काबिले तारीफ है। स्वच्छ भारत अभियान, प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने में 'मील का पत्थर' साबित होगा। भारत और राज्य सरकारों ने स्वच्छ भारत अभियान को एक जन-आंदोलन में परिवर्तित कर दिया है। आज हम भारत के लोग इस पर चर्चा करने लगे हैं। यदि हमारा युवा वर्ग इस अभियान में अपना पूर्ण योगदान दिया, तो हमारा भविष्य प्लास्टिक के ढेर पर नहीं, बल्कि स्वच्छ वातावरण में होगा। हम चैन की सांस ले सकेंगे।

आओ हम सब मिलकर अपने समाज, अपने वातावरण को प्लास्टिक मुक्त बनायें। प्लास्टिक को कहें न। घर से कपड़ों की थैलियां लेकर निकलें। कंपनियों द्वारा प्लास्टिक में पैक किये हुए सामानों को कहें न। समाज में इसके प्रति जागरूकता पहुंचाएं और खुद जागरूक बनें। बच्चों को भी सिखाएँ। जैसा कि कहावत है जिस तरफ जवानी चले, उस तरफ जमाना चले। अतः भारत के युवा वर्ग को विशेष रूप से इस अभियान में आगे आना होगा, प्लास्टिक मुक्त भारत बनाना होगा। हमें अपने बच्चों को प्लास्टिक जैसे महामारी से बचाना होगा। यदि भारत देश के एक सौ तीस करोड़ लोग प्रतिज्ञा कर लें कि हमें प्लास्टिक से मुक्ति पाना है तो हम भारत को 'स्वच्छ भारत' महान भारत और प्लास्टिक मुक्त भारत के रूप में स्थापित कर सकते हैं और पूरे विश्व को भी एक सीख दे सकते हैं और हम अपने देश के 'विश्व गुरु' के खिताब को कायम रख सकते हैं। **जय हिन्द, जय भारत, जय प्लास्टिक मुक्त भारत।**

(विजय प्रकाश गुप्ता)

वरि. प्रबंधक (एटीएम)





प्लास्टिक का प्रभावी निपटान

(प्रथम पुरस्कार)

“प्लास्टिक का प्रयोग अर्थात लाइलाज बीमारियों का भोग !”

सबसे पहले तो यह जानना आवश्यक है कि यह प्लास्टिक क्या होता है और इसका निर्माण कैसे और कहाँ से होता है। काला सोना नाम से जाना जाने वाला पेट्रोलियम ही प्लास्टिक का निर्माणकर्ता है। जब पेट्रोलियम से लाभकारी वस्तुओं को जैसे पेट्रोल, डीजल आदि को निकाल लिया जाता है तब जाकर यह अपदार्थ वस्तु प्लास्टिक प्राप्त होता है।

टाइलीन, पॉलिकाट आदि रसायनों की मदद से प्लास्टिक का निर्माण होता है और यही हानिकारक रसायन प्लास्टिक को और भी हानिकारक बना देते हैं। इन रसायनों कि वजह से प्लास्टिक के किसी प्रभावी निपटान के निष्कर्ष पर पहुँचना मुश्किल हो जाता है।

प्लास्टिक के प्रभावी निपटान के लिए यह जानना अति आवश्यक है कि वे कितने प्रकार के होते हैं। मुख्यतः दो प्रकार के प्लास्टिक पाये जाते हैं:-

1. थर्मोकोट प्लास्टिक
2. थर्मोसेटिंग प्लास्टिक

थर्मोकोट प्लास्टिक ऐसे प्लास्टिक होते हैं जिनका निपटान नहीं किया जा सकता। इनके इस्तेमाल से हमारी धरा को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। ये ऐसे प्लास्टिक होते हैं जो सैकड़ों सालों तक भी बिल्कुल वैसे ही रहेंगे जैसे अभी हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं:- पॉलीथीन (पन्नियाँ), बर्तनों को पकड़ने के लिए लगाए जाने वाले हैंडल आदि। इनके पुनः निर्माण के लिए एवं प्रभावी निपटान के लिए एक रास्ता निकाला जा सकता है। कोलतार के साथ अगर हम इस प्लास्टिक को पिघले हुए रूप में मिला दें तो हमारी सड़कें इतनी मजबूत बनेगी कि बाढ़ जैसी किसी विकराल स्थिति में भी अपनी जगह पर बनी रहेगी। पिघले हुए प्लास्टिक का उपयोग हम घरों के भी निर्माण में कर सकते हैं, जिससे उनमें मजबूती आएगी।

“बंद करो प्लास्टिक निर्माण, यही होगा स्वच्छता का प्रमाण

अब बात करते हैं थर्मोसेटिंग प्लास्टिक की। यह प्लास्टिक ऐसे होते हैं कि इनका पुनःनिर्माण करना संभव होता है। इनका प्रभावी निपटान भी संभव होता है। इसके कुछ उदाहरण हैं :- प्लास्टिक के टिफिन, गिलास, खिलौने आदि। परंतु हानियाँ भी बहुत होती हैं। इनके पुनःनिर्माण कार्य के दौरान कई हानिकारक एवं रासायनिक धुँएँ का निकास होता है जो हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ही हानिकारक है।





अब बात करते हैं इस प्लास्टिक के निपटान की । सबसे पहले तो हमें इस प्लास्टिक के उत्पादन पर रोक लगानी पड़ेगी । जिन चीजों में प्लास्टिक का प्रयोग आवश्यक होता है, उनकी जगह हमें ऐसे विकल्पों का इस्तेमाल शुरू करना चाहिए जिससे हम प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करें । प्लास्टिक के स्थान पर हमें कपास व जूट के बने थैलों का इस्तेमाल करना चाहिए । इससे हमें दो लाभ होंगे :-

पहला- प्लास्टिक से होने वाली हानियों पर रोक लगेगी ।

दूसरा- बेरोजगार एवं पिछड़े जनजातियों को अपनी रोजी-रोटी के लिए काम मिलेगा । प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए कई मुहिम चलाई गई हैं परंतु वे तभी सफल होंगी, जब सभी लोग अपनी सोच बदलेंगे व उस लक्ष्य पर अमल करेंगे । क्योंकि,

सोच बदलेगी, तभी देश बदलेगा

हमें यह प्रण लेना चाहिए कि हम एकल प्रयोगी प्लास्टिक के इस्तेमाल पर रोक लगाएंगे एवं धीरे धीरे प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगाएंगे एवं जनता में जागरूकता फैलाएंगे ।

जितना करेंगे प्लास्टिक का इस्तेमाल, पर्यावरण होगा बेहाल ।।
प्लास्टिक का प्रभावी निपटान, बनेगा हमारी तरक्की का मान ।।

स्वच्छ भारत

(सौम्या)

कक्षा 11 "ब"

एक कदम स्वच्छता के लिए, केंद्रीय विद्यालय, बमरौली- प्रयागराज





Effective disposal of Plastic

(Second Prize)

The 4 main methods of plastic disposal. These are: Landfilling, Incineration, Recycling and Biodegradation.

Landfilling

To be frank all plastic can be disposed in landfills however, landfilling is considered highly wasteful as it requires a vast amount of space and the chemical constituents and energy contained in plastic is lost (wasted) in this disposal route. In 2008, 29.2 million tons of plastic was disposed in landfilling in the united states. In countries where landfills are poorly managed, plastic wastes can be easily blown into water ways are carried out to sea by flood water. In addition, when plastics decompose in landfills they may leak pollutants (lenthlates and disphenol A) into the soil and surrounding environment.

Incineration

Plastic are derived from petroleum or natural gas filling them a stored energy value higher than any other material commonly found in the waste stream. Incineration return some of the energy from plastic production. In fact, one pound plastic can generate as much energy as wyoming coal and almost as much energy as fuel oil.

However plastic incineration tends to cause negative environment and health effect as hazardous substances may be released into the atmosphere in the process. For example, PVC and halogenated additives are mixed into plastic waste and their incineration lead to release of dioxins and polychlorinated – biphenyles into the environment.

Recycling

Many plastics can be recycled and the material recovered can be given a second life. However, this method is not fully utilized, due to difficulties with the collection and sorting of plastic waste. Many developing (and even some developed countries) have poor waste management facilities which often result in plastic (and other waste) being recklessly disposed into rivers and water bodies. Even though recycling is the most effective way to deal with plastic waste, its effectiveness is highly depended on public infrastructures to make recycling more efficient (recycling bins, specialized waste collection trucks)

Biodegradable plastics

Biodegradable plastics are plastics that decompose by the action of living organism. Biodegradable plastic have the potential to solve a number of waste management issues, especially for disposable packaging that cannot be easily separated from organic waste. However, biodegradable plastics are not without controversy. Even though biodegradable plastic can be completely metabolize by organisms into carbon dioxide and water, there are allegations the OXO-Biodegradable plastics many release metals into the environment.

(Ashutosh Bhatt)

Class – IX 'B'

Kendriya Vidyalaya, Bamrauli- Prayagraj





Effective disposal of Plastic

(Third Prize)

Our topic is effective disposal of plastic which is an important issue for all countries. If the problem of disposal of plastic can be managed properly then our country will actually become a 'Swachh Bharat'. When we think about disposal three things that strike in our mind are: Recycle, Reuse plastic is a thing which we use in daily life in a large amount because of that it cannot be banned at a time, it takes time to decrease the use of plastic. Under disposal of plastic firstly we can recycle it, this is an effective idea. After recycling the plastic can be reused. There are many ways by which we can re-use it. For example; We can use plastic bottles in our gardens means to use plastic as a pot for planting even in my home we can use plastic as a pot for planting. And it is very easy to do, and also very cheap, to money we have to invest in it. Just to take a bottle and use it. Use plastic in making roads and there are many ways by which people use plastic for making flowers and things for showpiece. People use plastic in making footpath or decorating walls and we can use the caps of bottle. There are also many ways to reuse plastic. In the state of Karnataka, A man thinks to make biodegradable and water soluble plastic. He not only thinks but he can do this and in the south it can be used in 2, 3 states and the plan to put another industries in all over the country. This is a big initiative in the field of plastic. The plastic bag he made is not much of price the plastic bag is just of 'Four Rupees' per bag and I also think it is not expensive and it is a good idea. Now in some months ago some students of IIT think to use plastic as fuel and they can do it. They make petrol from plastic so by also these work we can use plastic effectively without damaging the environment. But for this we have to collect plastic means people throw plastic on the roads, railways station etc so we have to make plastic booth in which the people can put into the plastic booth after collecting it, it can be used for different purpose like for road making, showpieces, pots, recycling etc. There are many plastic things which cannot be used due to bad quality like water bottles which we can buy from railway stations and from road side, so for that type of bottle their caps can be reused in making showpieces things or decorating walls and the plastic bottles can be recycled. And if we think so we take more solutions for that so let's start think and take a step towards disposal of plastic but effectively. And in the views of swachhta some students of engineering make a machine and this machine help in taking out garbage from sewars. They do this thing for the workers who can clean sewars and due to this many disease by which they can suffer and they hadn't money for proper treatment for these disease. This machine help them a lot.

(Swati Mishra)

Class – IX 'D'

Kendriya Vidyalaya, Bamrauli- Prayagraj





Effective disposal of Plastic

(First Prize)

Introduction :-

Plastic pollution refers to the accumulation of plastic in an area which adversely affects the wildlife and Human habit. Plastic is nothing but polymer based article with greater molecules mass which is different to be disposed.

Categories of plastic pollutants :- Plastics are generally categorised based on their micro, mero or macro base.

PET - Polythene terephthalate

PVC - Poly vinyl chloride

V - Vinyl

PP - Polyprelene

PS – Polystrelene

How does plastic enters our life:- Plastic is very cheap and durable and thus, plastic is used very effeciently. Nearly around 5000 years ago people used to utilise the tools, articles, utensils etc. made of metal. Till when petroleum based plastic was in use in 1907. It was when a chemist Ben lockwood invented bakelite. He found it could easily be moulded. The ERA OF PLASTIC HAD BEGUN.

Effective disposal of Plastic:

Solar impulse efficient label

This term above refers to the three golden Rs mantra's it.

Reuse : Examining the plastics . The plastic which can be reused should be used a second time or third.

Reduce : Avoiding the plastic which is harmful or cannot be used again.

Recycle : We must send our plastics to the recycling units. From where the plastic can be remade into other useful articles.

Actions towards plastic :- We must reduce our plastics dependencies. Consumers duty should be increased i.e we must carry our own carry bags. Government enabled act like ban on polythelene, ban on plastic bottles should be strictly followed. Funds for cleaning should be increased. Polythelene must not be thrown in the seas.

Some innovative uses :-

- (1) Plastic Roads
- (2) Plastic furnitures
- (3) Plastic houses
- (4) Plastic clothes – Denim, levis
- (5) 3rd print –protoprint.

Steps by individuals :-

- (1) Use your own carry bags
- (2) Do not buy filtered water
- (3) Bring your own bottle or cafe
- (4) Introduce yourself to a kabadiwala which is a doorstep service to take away your plastic waste for recycling.

Alternatives :-

- (1) leaf disposals
- (2) Cellophone or aluminium
- (3) Use of cardboard boxes
- (4) Paper bags
- (5) Leave away the plastic straw to enjoy juice.

Conclusion :- Countries all over the world are destroying our earth and we need to save it at any cost. So,

There's only one solution. Stop plastic at the point of production.

(Sarthak Swarnkar)

S/O of Sh. Jitendra Swarnkar, AM (PA)





Effective Disposal of Plastic

Plastic is one of the most important thing in the human life. It is cheaper than other materials and is more stronger. It can be moulded into any shape as desired by anyone. Plastic has both advantages and disadvantages they are:-

Plastic is the most versatile material on earth and where as it is one of the reason of causing polution on our planet. Every year 8 million tones of plastic is dumped into the water bodies like ocean lakes, river and ponds and once it enters the atmosphere/ environment and it does not go away. I stares breaking into smaller particles which we known as microparticles.

Plastic is also very useful in our day-to-day life by the following we can come to know about the advantages of plastic it is used in our day to day life if we see in our surrounding, we will find that we are surrounded by it the pen we use are made up of plastic the chairs, fans tables etc.

Every minute we produce and use million tons of plastic wastes, bottles etc. When we use bottles we throw them carelessly and they are recycled.

If the plastic produced in few decades is cling wrapped them it would be enough to wrap the whole planet with it.

We produce millions and million tons of plastic and only a few percent of it is recycled which is only 70%. The most easiest and most used way of reducing the plastic is to stop buy the product made up of plastic and we can dispose plastic. We only to apply science which already exist.

One of the way of disposing plastic is to use the Golden 3 Rs of plastic 3 Rs stand for Reduce, Reuse, Recycle. It is further divided in five parts and more.

Reduce – The reduce in the use of the plastic is very important as for reducing the percentage of plastic produced. If we reduce the use of plastic the producers of plastic will also reduce the production and for reducing the use we can use woolen bags and paper bags to carry the things to buy from the market. We can replace the plastic by other things like – woolen box etc.

Reuse – When we have reduced the use of the plastic we need to reuse it, if we reuse it, we will not need to buy the plastic product as result the companies will stop producing that produce and plastic will be stopped producing.

Recycle – It is the most and the main step to be followed the plastic which we would be reusing would sometime be defected, so we should Recycle it. In case to get a new product out of it by doing this we can make the maximum use of plastic.

By followings the above method we can dispose plastic. So, stop using plastic and start recycling. Or we can use the remaining plastic to make craft out of it like stand and other which can be sold by this also we can dispose plastic.

So, we can keep in mind the re-mix of a song:-

**“Plastic plastic go away!
Little plants and animals want to play”.**

By keeping this in mind we can create a plastic free India.

(Sujal Singh Chauhan)
S/o Sh. Ranbeer Singh Chauhan, AM (HR)





Effective way of Plastic disposal

Plastic is an integral part of our everyday life, use cannot control or rule over there but use can reduce/extent by following these steps:-

Plastic recycling:- We can separate plastic from garbages at home or any other place and we can recycle the plastic, and we can reduce the impact of plastic an environment.

Using inceneration:- We use to burn the plastic waste on the incenerators, the centres are outside the city. There is another problem viewed about our pollution. So we have to reduce the usage of inceneratore, these can help into get free from air pollution.

Opposing the manufacturing of plastic material:- We have to stop the production of plastic material producing from factories because in these plastic the foods are been packaged, if we use the paper bag or cloth bag instead of plastic we can reduce the extent of plastic.

Using garbage bins:- We can dispose the plastic into garbage bins intead of throwing the plastic here and there like plastic bottle, polythene and plastic materials.

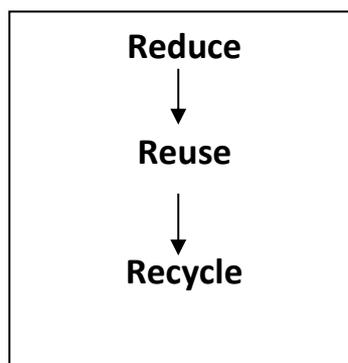
By neat throwing the plastic in open areas:- Nowadays we use to throw the plastic in open areas for which the environment is getting polluted. Many people use to throw the plastic garbages in the water bodies, these harm the marine life and the water gets poisonous. So, if we stop throwing the plastic in open areas our environment will be pollution free.

Regulating the government rules:- We should follow the government if they are helping us in any activities related to plastic disposal.

Creating awareness among the citizen of the country – We should create awareness among the citizen, because if the citizen/people will help us in these all activities, surely our nation is going to be pollution free. If we are following these all steps surely there will be a end of plastic.

एक कदम स्वच्छता का आर

3 R's

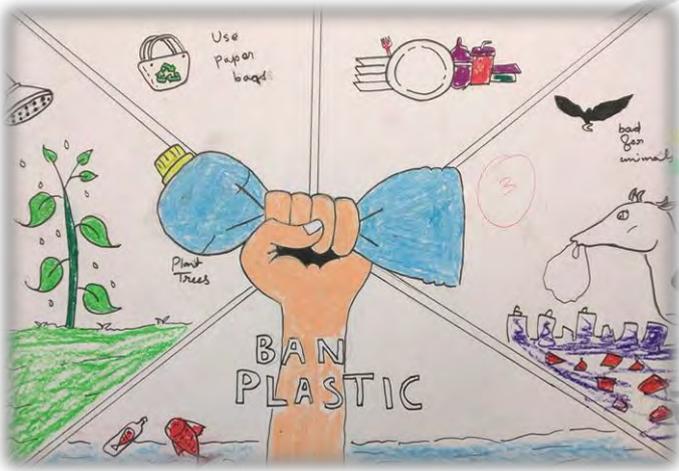
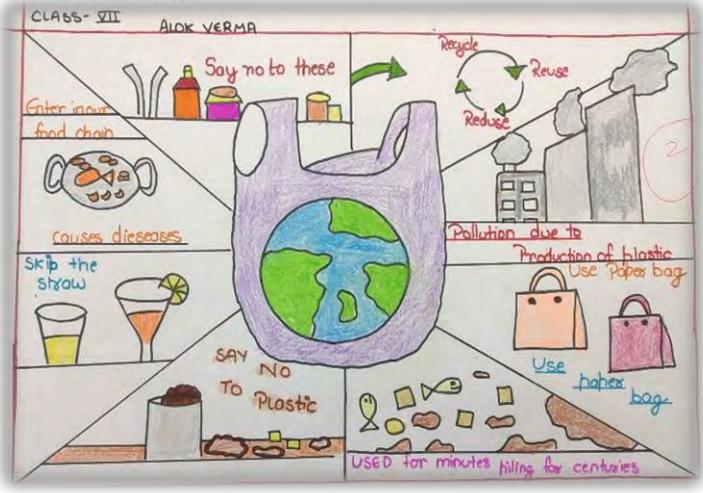


(Tauhiduzzaman Gulzar)
S/o Sh. Gulzar Ahmed, AGM (ATM)





WINNER POSTERS





(डॉ. रंजिनी पाण्डेय)
कल्याणमयी सदस्या





SAVE THE OCEAN
KEEP THE SEA PLASTIC
FREE ~
RECYCLE • REDUCE • REFUSE.

स्मृति गुप्ता
कनि. कार्यपालक (मा.सं.)





SOCIAL OUTREACH

● रविवार ● 29 सितम्बर 2019 | **सहारा** | प्रयागराज, 29 सितंबर 2019 **दैनिक जागरण** 7

अमर उजाला
प्रयागराज | रविवार, 29 सितंबर 2019 **8**

सिविल लाइंस बस स्टेशन में बटोरा गया प्लास्टिक का कचरा

प्रयागराज। 'स्वच्छता ही सेवा-2019' कार्यक्रम के तहत शनिवार को एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा संचालित नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज (सीएटीसी) की ओर से सिविल लाइंस बस स्टेशन पर साफ सफाई अभियान चलाया गया। इस दौरान बस स्टेशन पर प्लास्टिक की बेकार पड़ी वस्तुओं का संग्रहण किया गया। साथ ही सीएटीसी के कर्मचारियों एवं प्रशिक्षणार्थियों द्वारा साफ सफाई भी की गई। इस दौरान सीएटीसी की ओर से 27 अक्टूबर तक एक विस्तृत कार्यक्रम आयोजित किया गया है। कालेज के कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित ने इस पूरे अभियान का नेतृत्व किया।

सीएटीसी ने चलाया प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान

प्रयागराज। नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज (सीएटीसी) ने शनिवार को सिविल लाइंस बस अड्डे पर स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान चलाया। इस दौरान परिसर में साफ-सफाई करते फेकी गयी प्लास्टिक को एकत्र कर निगम को सौंप दिया। सीएटीसी ने शनिवार को कालेज के कार्मिकों एवं प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सिविल लाइंस बस अड्डे पर प्लास्टिक की बेकार फेंकी पड़ी वस्तुओं का संग्रहण किया गया और वहां पर साफ-सफाई की गई। एकत्रित किए गए प्लास्टिक व कचरों को नगर निगम को सौंप दिया गया। सीएटीसी के कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित के नेतृत्व में पूरा अभियान चला। उनके साथ सीएटीसी के महाप्रबंधक (संचार) शरणागत श्रीवास्तव, इस आयोजन के नोडल अधिकारी उप महाप्रबंधक (विद्युत) मुकेश चंद्र उपाध्याय एवं उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के अधिकारी अनवर व मनोज शर्मा तथा सीएटीसीके अन्य वरिष्ठ अधिकारी व कार्मिक उपस्थित रहे। कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित ने बताया कि सीएटीसी भारत सरकार की प्लास्टिक मुक्त भारत मुहिम के अंतर्गत प्लास्टिक के प्रयोग को रोकने हेतु जागरूकता पैदा अभियान चला रहा है। इसी तरह का एक कार्यक्रम गांधी जयंती के दिन छिवकी रेलवे स्टेशन पर भी किया जाएगा।

सीएटीसी ने बस अड्डे पर चलाया स्वच्छता अभियान

प्रयागराज : 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के अंतर्गत नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज (सीएटीसी) द्वारा शनिवार को सिविल लाइंस बस अड्डे पर कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित के नेतृत्व में सफाई करवाई गई। कालेज के कार्मिकों एवं प्रशिक्षणार्थियों ने प्लास्टिक की चीजों को भी इकट्ठा कर नगर निगम को सौंपा। महाप्रबंधक (संचार) शरणागत श्रीवास्तव, मुकेश चंद्र उपाध्याय, अनवर, मनोज शर्मा आदि ने अभियान में सहयोग किया। प्रयाग जंक्शन पर की गई सफाई : प्रयाग जंक्शन पर रेलवे के अधिकारी-कर्मचारियों ने रिलायंस जियो के साथ मिलकर स्वच्छता का अभियान चलाया। स्टेशन परिसर, प्लेटफार्म की सफाई की गई। स्टेशन अधीक्षक संजय कुमार व अन्य अधिकारी शामिल हुए। **नुकड़ नाटक के जरिए दिया स्वच्छता का संदेश** : जिला प्रशासन एवं गंगा सेवा मिशन से 'स्वच्छता ही सेवा' मिशन के अंतर्गत नुकड़ नाटक 'स्वच्छता हमारी नैतिकता' का मंचन शनिवार को सिविल लाइंस बस स्टैंड और विंग बाजार के सामने किया गया। इसमें नुकड़ नाटय अभिनय संस्थान के कलाकारों ने गंदगी से होने वाले नुकसान को बताया। नाटक का लेखन संतोष कुमार एवं निर्देशन कृष्ण कुमार मौर्य ने किया।

11 • प्रयागराज • रविवार • 29 सितंबर 2019 **हिन्दुस्तान**

बस अड्डे के पास चलाया स्वच्छता अभियान

प्रयागराज। नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज सीएटीसी की ओर से शनिवार को सिविल लाइंस बस अड्डे के पास स्वच्छता अभियान चलाया गया। कॉलेज के कर्मचारियों व प्रशिक्षणार्थियों ने बस अड्डे के पास से प्लास्टिक की बेकार वस्तुएं उठाई व साफ-सफाई की। सीएटीसी के कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित ने भी शिरकत की। महाप्रबंधक संचार शरणागत श्रीवास्तव, नोडल अधिकारी उप महाप्रबंधक विद्युत मुकेश चंद्र उपाध्याय, परिवहन निगम के अधिकारी अनवर व मनोज शर्मा आदि मौजूद रहे।





सीएटीसी प्लास्टिक के प्रयोग से होने वाले नुकसानों एवं एकल प्रयोग प्लास्टिक के प्रयोग को रोकने हेतु आम लोगों में जागरूकता पैदा कर रहा है।

अतुल दीक्षित, कार्य, निदेशक

3 अक्टूबर 2019

सहारा- | www.rashtriyasahara.com



छिवकी स्टेशन पर बेकार प्लास्टिक का किया संग्रह

सहारा न्यूज ब्यूरो
प्रयागराज।

नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज ने बुधवार को छिवकी रेलवे स्टेशन पर स्वच्छता अभियान चलाया। इस दौरान स्टेशन पर व्यापक पैमाने पर साफ-सफाई के अलावा बेकार बड़े प्लास्टिक का संग्रह किया गया।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के बमरौली स्थित नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज (सीएटीसी) के ओर से 23 सितंबर से 27 अक्टूबर तक 'स्वच्छता ही

नोडल अधिकारी उप महाप्रबंधक (विद्युत) मुकुंज चंद्र उपाध्याय एवं उत्तर-मध्य रेलवे के वरिष्ठ डीएफएम, डीएनआई एवं छिवकी रेलवे स्टेशन के स्टेशन अधीक्षक आरएस मिश्रा, मुख्य याई मास्टर विनोद राय सहित रेलवे के अन्य अधिकारी तथा सीएटीसी के कुल सौ से अधिक वरिष्ठ अधिकारियों व

सीएटीसी का 29 तक चलेगा स्वच्छता ही सेवा अभियान अफसरों-कर्मचारियों ने किया श्रमदान

कर्मिकों ने श्रमदान कर प्लेटफार्मों व रेलवे ट्रैक को साफ-सफाई की, वहां से कचरा हटाया और रेल यात्रियों से बावचित करके उन्हें स्वच्छता के महत्व से अवगत कराया और सिंगल यूज प्लास्टिक से होने वाले

सेवा' अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में गांधी जयंती के अवसर पर कालेज के कर्मिकों एवं प्रशिक्षणार्थियों द्वारा छिवकी रेलवे स्टेशन पर बेकार पड़े प्लास्टिक का संग्रहण किया गया और वहां पर साफ-सफाई की गई। अभियान में, सीएटीसी के कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित ने स्वयं वहां पर उपस्थित होकर इस पूरे अभियान का नेतृत्व किया। उनके साथ सीएटीसी के महाप्रबंधक (संचार) शरणगत श्रीवास्तव,

नुकसानों को जानकारी देते हुए उन्हें उसका प्रयोग न करने की सलाह दी। कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित ने जानकारी दी कि नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज (सीएटीसी) भारत सरकार की प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत प्लास्टिक के प्रयोग से होने वाले नुकसानों एवं एकल प्रयोग प्लास्टिक के प्रयोग को रोकने हेतु आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए इस तरह के कार्यक्रम लगातार आयोजित कर रहा है।

गांधी जयंती: एक नजर



गांधी जयंती पर एयरपोर्ट अथॉरिटी के अफसरों और कर्मचारियों ने सफाई अभियान चलाया। • हिन्दुस्तान



साक्षिप्त समाचार



छिवकी स्टेशन पर स्वच्छता अभियान में जुटी सीएटीसी की टीम • जागरण

छिवकी स्टेशन पर चला सफाई अभियान

जासं, प्रयागराज : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के बमरौली स्थित नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज (सीएटीसी) की ओर से चल रहे स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत बुधवार को अधिकारियों कर्मचारियों ने छिवकी स्टेशन पर सफाई की। वहां बेकार पड़े प्लास्टिक को इकट्ठा किया। इस अवसर पर सीएटीसी के कार्यपालक निदेशक अतुल दीक्षित ने कहा कि स्वच्छता अपनाकर बीमारियों से दूर रह सकते हैं। इस मौके पर सीएटीसी के महाप्रबंधक संचार शरणगत श्रीवास्तव, मुकुंज चंद्र उपाध्याय, आईपीएस यादव, आरएस मिश्रा आदि मौजूद रहे।

एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर पर सीएटीसी में प्रदर्शनी

जासं, प्रयागराज : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की ओर से नागर विमानन प्रशिक्षण कालेज (सीएटीसी) बमरौली में स्वच्छता ही सेवा माह मनाया जा रहा है। इस दौरान एक कदम प्लास्टिक मुक्त भारत की ओर विषय पर क्राफ्ट प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें बच्चों ने प्लास्टिक की वस्तुओं से कलात्मक चीजें बनाई। प्रतियोगिता में कक्षा चार से बारहवीं तक के बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने इस दौरान प्लास्टिक का उपयोग न करने की शपथ ली। इसमें सबसे बेहतर कला को 25 अक्टूबर को पुरस्कृत किया जाएगा।



इस दौरान जीएम एटीएम विक्रम कपूर ने सभी कर्मियों से कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करें। यह पर्यावरण के लिए खतरनाक है। उन्होंने बताया कि प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान के तहत बुधवार को सीएटीसी परिसर के पास

सीएटीसी में हुई प्रतियोगिता में बच्चों ने प्लास्टिक से बनाए सजावटी सामान। और गांव में श्रमदान किया जाएगा। इस मौके पर जीएम सीएनएस शरणगत श्रीवास्तव, एजीएम एमसी उपाध्याय आदि मौजूद रहे।





Principal CATC(AAI) ... · 24 Sep
 Commencement of Swachhta Hi Sewa-2019 campaign with the aim to make India "Plastic Free" took place at CATC Campus with Swachhta Pledge and Tree Plantation Drive.
 @AAI_Official @MoCA_Gol
 @PMOIndia
 #SwachhBharatAbhiyaan
 #SwachhataHiSeva2019
 #150YearsofGandhi
 #PlasticWasteFree



Principal CATC(AAI) ... · 02 Oct
 स्वच्छ एवं प्लास्टिक मुक्त भारत के लिए उ.म.रेलवे के सौजन्य से छेवकी स्टेशन को प्लास्टिक मुक्त बनाने हेतु भाविप्रा द्वारा स्वच्छता महाश्रमदान एवं FIT India कार्यक्रम आयोजित।
 #FitIndiaMovement: 2 अक्टूबर, 2 KM का वादा
 @AAI_Official @MoCA_Gol
 @GMNCR1 @drmnrcrd
 #swachhtahisewa

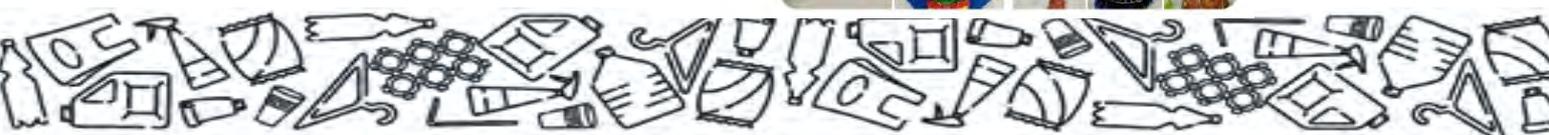


AMITABHA @drmnrcr... · 02 Oct
 Senior officials and representatives from Airport Authority of India volunteered in स्वच्छता अभियान today at Allahabad Chheeki station on the occasion of 150th birth anniversary of Bapu.
 @PMOIndia @PiyushGoyal
 @RailMinIndia @GMNCR1
 @swachhbharat

Principal CATC(AAI) ... · 28 Sep
 भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाने के उद्देश्य से कार्यपालक निदेशक, श्री अतुल दीक्षित जी के नेतृत्व में उ.प्र.राज्य सड़क परिवहन निगम के साथ सीएटीसी द्वारा "Plastic Collection" हेतु स्वच्छता श्रमदान कार्यक्रम दिनांक 28.09.2019 को बस स्टेशन, प्रयागराज पर आयोजित किया गया।
 @AAI_Official



Principal CATC(AAI) @PC... · 5d
 स्वच्छता माह के दौरान कर्मचारियों एवं बच्चों में Plastic Re-use को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सीएटीसी में प्लास्टिक से बने क्राफ्ट या उपयोगी वस्तुओं के प्रदर्शनी का आयोजन।
 @AAI_Official @swachhbharat
 @MoCA_Gol
 #plasticreuse #swachhtahisewa
 #plasticfree #saynotoplastic





विजेताओं की सूची

कर्मचारियों एवं परिजनों हेतु निबंध प्रतियोगिता

प्रथम	श्रीमती विनीता स्वर्णकार, कल्याणमची सदस्य
द्वितीय	श्री राजेश कुमार यादव, प्रबन्धक (एटीएम)
तृतीय	श्री विजय प्रकाश गुप्ता, वरि. प्रबन्धक (एटीएम)

कर्मचारियों एवं परिजनों हेतु भाषण प्रतियोगिता

प्रथम	श्री विकास चन्द्र श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक (एटीएम)
द्वितीय	श्री अमृत शुक्ला, वरि. प्रबन्धक (संचार)
तृतीय	श्री प्रमोद कुमार मिश्रा, वरि. प्रबन्धक (एटीएम)

केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली के कक्षा 09 से 12वीं के लिए निबंध प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री सौम्या, कक्षा 11 बी, केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली
द्वितीय	श्री आशुतोष भट्ट, कक्षा 9 बी, केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली
तृतीय	सुश्री स्वाति मिश्रा, कक्षा 9 डी, केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली

केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली के कक्षा 05 से 08वीं के लिए पोस्टर प्रतियोगिता

प्रथम	सुश्री प्रिया, कक्षा 8 बी, केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली
द्वितीय	सुश्री एटीषा सिंह, कक्षा 8 ए, केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली
तृतीय	सुश्री पलक कुमारी, कक्षा 6 बी, केन्द्रीय विद्यालय, बमरौली

कर्मचारियों के कक्षा 8 से 12वीं तक के बच्चों हेतु निबंध प्रतियोगिता

प्रथम	श्री सार्थक स्वर्णकार, पुत्र श्री जितेंद्र स्वर्णकार, स.प्र. (पीए)
द्वितीय	श्री सूनल सिंह चौहान, पुत्र श्री रणबीर सिंह चौहान, स.प्र. (मा.सं.)





तृतीय	श्री तौहीद उज़्ज़मान गुलज़ार, पुत्र श्री गुलज़ार अहमद, स.म.प्र (एटीएम)
प्लास्टिक रि-यूज क्राफ्ट प्रतियोगिता/प्रदर्शनी	
कर्मचारी एवं परिजन	
प्रथम	श्रीमती विनीता स्वर्णकार, कल्याणमयी सदस्य
द्वितीय	श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव, कल्याणमयी सदस्य
तृतीय	श्रीमती सीमा यादव, कल्याणमयी सदस्य
कार्मिकों के कक्षा 8वीं से ऊपर के बच्चे	
प्रथम	श्री सार्थक स्वर्णकार, पुत्र श्री जितेंद्र स्वर्णकार, स.प्र. (पी.ए.)
द्वितीय	श्री उदगीथ पाण्डेय, पुत्र श्री देवकान्त पाण्डेय, स.प्र. (राजभाषा)
तृतीय	सुश्री सिन्धु डे, पुत्री श्री शुभन डे, स.म.प्र. (एटीएम)
कार्मिकों के कक्षा 4 से 7वीं तक के बच्चे	
प्रथम	सुश्री समृद्धि स्वर्णकार, पुत्री श्री जितेंद्र स्वर्णकार, स.प्र. (पीए)
द्वितीय	श्री देवांश, पुत्र श्री प्रमोद कुमार, वरि. प्रबन्धक (एटीएम)
तृतीय	श्री कुशाब् श्रीवास्तव, पुत्र श्री अभिषेक कुमार, स.म.प्र. (संचार)
कार्मिकों के कक्षा 4 से 7वीं तक के बच्चों की पोस्टर प्रतियोगिता	
प्रथम	सुश्री समृद्धि स्वर्णकार, पुत्री श्री जितेंद्र स्वर्णकार, स.प्र. (पीए)
द्वितीय	सुश्री अनुष्का वर्मा, पुत्री श्री आलोक वर्मा, स.म.प्र. (संचार)
तृतीय	सुश्री शानश्री रानी बोरोगुयारी, पुत्री श्री केनेडी बोरोगुयारी, स.म.प्र. (एटीएम)






भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA

नागर विमानन प्रशिक्षण कॉलेज
बमरौली, प्रयागराज